आज़ादी का अमृत महोत्सव

G20 भारत 2023 INDIA

आरईसी REC

असीमित ऊर्जा, अनन्त संभावनाएं

Endless energy. Infinite possibilities.

आरईसी लिमिटेड की गृह पत्रिका

तमसो मा ज्योतिर्गमय

ऊर्जायन

अंक–10, अगस्त, 2023

आरईसी अब एक महारत्न कंपनी

ऊर्जा क्षेत्र का आधार

कई दशकों से ऊर्जा क्षेत्र का वित्तपोषण

- उत्पादन
- वितरण
- पारेषण
- नवीकरणीय ऊर्जा
- ऊर्जा ट्रांजिशन
- अवसंरचना क्षेत्र

के वित्तपोषण में भागीदार

अधिक जानने के लिए स्कैन करें

हमें फॉलो करें @reclindia

आरईसी
REC
असीमित ऊर्जा, अनन्त संभावनाएं
Endless energy. Infinite possibilities.

पत्रिका प्रबंधकीय मंडल

सरंक्षक
श्री विवेक कुमार देवांगन
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

श्री अजय चौधुरी
निदेशक (वित्त)

श्री वी.के. सिंह
निदेशक (तकनीकी)

श्री आर.पी. वैष्णव
कार्यपालक निदेशक
(आरईसीआईपीएमटी, आईटी, राजभाषा)

प्रधान संपादक
श्री पी.पी. सिंह
मुख्य महाप्रबंधक
(राजभाषा)

संपादक
श्री व्योमकेश शर्मा
उप प्रबंधक (राजभाषा)

संपादन सहयोग
श्री एस. एन. मौर्य
अधिकारी (राजभाषा)

हमसे संपर्क करें

आरईसी लिमिटेड

प्लॉट नं. आई–4, सेक्टर–29, गुरुग्राम,
हरियाणा–122001,
फोनः 91-124-4441300
ई-मेलः vyomkesh21@gmail.com
वेबसाइटः www.recindia.nic.in

सीआईएनः L40101DL1969GO1005095

इस पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। यह आवश्यक नहीं है कि आरईसी की उनसे सहमति हो। अतः पत्रिका में व्यक्त विचारों के लिए आरईसी अथवा संपादन टीम किसी भी प्रकार से उत्तरदायी नहीं है इसके लिए संबंधित लेखक उत्तरदायी हैं।

अनुक्रम

संदेश

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का संदेश 4
निदेशक (वित्त) का संदेश 5
निदेशक (तकनीकी) का संदेश 6
कार्यपालक निदेशक (राजभाषा) का संदेश 7
प्रधान संपादक की कलम से 8

लेख एवं कविता

भारत में ग्रीन अमोनिया का भविष्य- गोविंद सैनी 9
हम हैं आरईसी- अवनीश भारती 11
सामाजिक ऋण का भुगतान- कुंदन लाल 12
महंगाई एक ऐसा खेल है जिसे आपको खेलना ही पड़ेगा- पार्थ शाह 14
स्मार्ट प्रीपेड मीटरः एक उपभोक्ता के दृष्टिकोण से – राहुल गुप्ता 17
आखिरी ख्वाहिश- लक्ष्येश्वर पांडा 20
गोबरधन : स्वच्छ एवं ऊर्जावान भारत की ओर एक कदम- मोनिका प्रियदर्शिनी 21
कोटा - फैक्ट्री- मुकेश 22
पुस्तक समीक्षा रघुराम जी. राजन द्वारा लिखित 'आई डू व्हाट आई डू'- सिमरदीप सिंह 23
आयुर्वेद के अनुसार वर्षा व शरद ऋतुचर्या- इरफान राशिद 25
स्काईडाइविंग – एक अद्भुत अनुभव- तुषार गनेर 27
आरईसी लिमिटेडः विद्युत क्षेत्र में गौरव और प्रतिष्ठा की गाथा 29
महिलाओं की स्थिति: कल्पना और हकीकत- इशिता प्रिया भारती 32
आरईसी– ऊर्जा क्षेत्र का सूरज- निर्भय गोयल 34
शिलांग का मावलिनॉन्ग गाँवः स्वच्छता का आदर्श- व्योमकेश शर्मा 35

कार्यक्षेत्र एवं कारोबार

कारोबार से संबंधित गतिविधियां 37
आरईसी एसोसिएट्स की बैठक 38
पुरस्कार एवं प्रशस्तियां 40
अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन 42
सी. एस. आर. गतिविधियां 43
संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निरीक्षण 44

आरईसी REC
असीमित ऊर्जा, अनन्त संभावनाएं
Endless energy. Infinite possibilities.

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का संदेश

देश के सभी गांवों और घरों के विद्युतीकरण द्वारा आरईसी ने राष्ट्र–निर्माण का एक लंबा सफर तय किया है और केंद्र सरकार की सर्वाधिक उल्लेखनीय फ्लैगशिप योजनाओं दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना (डीडीयूजीजेवाई) और प्रधानमंत्री सहज बिजली हर घर योजना (सौभाग्य) के लिए नोडल एजेंसी के रूप में अपने दायित्वों का सफलतापूर्वक निर्वहन किया है। दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना के तहत देश के शत–प्रतिशत गांवों का विद्युतीकरण किया गया और प्रधानमंत्री सहज बिजली हर घर योजना के तहत रिकॉर्ड समय में 2.86 करोड़ से अधिक घरों को विद्युतीकृत किया गया था। केन्द्र सरकार की आर.डी.एस.एस. स्कीम को लागू करने में भी आरईसी नोडल एजेंसी के रूप में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। आर.डी.एस.एस. स्कीम का लक्ष्य देश के विद्युत वितरण घाटे को कम करना है।

पूरे विद्युत क्षेत्र में विद्युत उत्पादन, पारेषण, वितरण एवं अक्षय ऊर्जा परियोजनाओं को ऋण सहायता प्रदान करने में आरईसी की अग्रणी भूमिका है। मैं सभी कार्मिकों से अपेक्षा करता हूं कि जिस प्रकार देश के विद्युत क्षेत्र के विकास के लिए हम पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ कार्यरत हैं, उसी प्रकार अपने संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करते हुए हम कार्यालय का अधिक से अधिक काम राजभाषा हिंदी में करें।

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि केन्द्र सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन के लिए आरईसी द्वारा हिंदी गृह पत्रिका 'ऊर्जायन' का प्रकाशन किया जाता है। मैं आशा करता हूं कि यह पत्रिका हमारे कार्मिकों के कलात्मक एवं बौद्धिक अपेक्षाओं को पूरा करेगी। पत्रिका से जुड़े सभी कार्मिकों को मैं बधाई देता हूं और यह कामना करता हूँ कि पत्रिका अपने उद्देश्यों में सफल होगी। पत्रिका के नए अंक के प्रकाशन के अवसर पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ!

विवेक कुमार देवांगन
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

निदेशक (वित्त) का संदेश

संघ की राजभाषा नीति के अनुपालन हेतु आरईसी निगम कार्यालय में हिंदी गृह पत्रिका 'ऊर्जायन' का प्रकाशन एक सराहनीय पहल है। मेरा मानना है कि प्रत्येक व्यक्ति स्वाभाविक रूप से कला–प्रेमी और लेखक होता है। यह पत्रिका हमारे कार्मिकों के उसी लेखक तथा कलाप्रेमी व्यक्तित्व को अभिव्यक्ति प्रदान करने का एक मंच है और उन्हें रचनात्मक और वैचारिक रूप से प्रबुद्ध बनाती है।

आरईसी विद्युत मंत्रालय के अधीन देश की एक अग्रणी एन.बी एफ.सी. है और वित्तीय वर्ष 2022–23 में कंपनी को अब तक का सर्वाधिक ग्यारह हजार पचपन करोड़ रूपये का निवल लाभ हुआ है। कंपनी के सभी कार्मिकों से मेरा आग्रह है कि जिस प्रकार हम आरईसी की वित्तीय स्थिति को सुदृढ़ बनाने और कारोबार में वृद्धि के लिए पूरे समर्पण के साथ काम करते हैं, उसी प्रकार हम कार्यालय के काम–काज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करें।

पत्रिका के नए अंक के प्रकाशन के अवसर पर मेरी शुभकामनाएँ !

अजय चौधुरी
निदेशक (वित्त)

निदेशक (तकनीकी) का संदेश

राजभाषा हिंदी के प्रति प्रेम राष्ट्र–प्रेम का ही एक रूप है। आजादी के बाद संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को हिंदी को देश की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। इसलिए केन्द्र सरकार के अधीन काम करने वाले सभी कार्यालयों में राजभाषा हिंदी का प्रयोग एक संवैधानिक दायित्व है।

राजभाषा हिंदी के प्रयोग एवं प्रचार–प्रसार के लिए आरईसी हमेशा प्रतिबद्ध रही है। कंपनी के सभी कार्यालयों द्वारा भारत सरकार की राजभाषा नीति का पालन किया जाता है और राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए समय–समय पर विभिन्न आयोजन भी किए जाते हैं। मैं सभी कार्मिकों से अपेक्षा करता हूँ कि वे केन्द्र सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन के लिए अपना अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करेंगे।

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि राजभाषा नीति के अनुपालन के लिए हिंदी पत्रिका 'ऊर्जायन' के नए अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी कार्मिकों को मेरी ओर से शुभकामना!

वी.के. सिंह
निदेशक (तकनीकी)

आरईसी
REC
असीमित ऊर्जा, अनन्त संभावनाएं
Endless energy. Infinite possibilities.

कार्यपालक निदेशक (राजभाषा) का संदेश

संघ की राजभाषा होने के कारण हिंदी का प्रयोग करना केन्द्र सरकार के सभी कार्मिकों का दायित्व है। शब्द भंडार और व्याकरण के दृष्टिकोण से हिंदी एक समृद्ध भाषा है। हिंदी भाषा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि हमारे देश के अलग–अलग प्रदेशों में इसके अनेक रूप देखने को मिलते हैं। बंगाल, महाराष्ट्र, दक्षिण भारत और पूर्वोत्तर के राज्यों के लोगों ने अपनी–अपनी स्थानीय भाषा के अनुसार हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में अपनाया है।

केन्द्र सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन हेतु कंपनी द्वारा हिंदी गृह पत्रिका 'ऊर्जायन' का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिकाएँ किसी भी संगठन का आईना होती हैं। इससे किसी भी कार्यालय की प्रमुख गतिविधियों की झलक एक साथ मिल जाती है।

पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी कार्मिकों और संपादक मण्डल को मेरी ओर से शुभकामनाएँ।

आर.पी. वैष्णव
कार्यपालक निदेशक
(आरईसीआईपीएमटी, आईटी, राजभाषा)

आरईसी
REC
असीमित ऊर्जा, अनन्त संभावनाएं
Endless energy. Infinite possibilities.

प्रधान संपादक की कलम से

राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए आरईसी के सभी कार्यालयों में केन्द्र सरकार की राजभाषा नीति को पूरी तरह से लागू किया गया है। निगम में विभिन्न आयोजनों के माध्यम से राजभाषा हिंदी का प्रचार–प्रसार किया जा रहा है और संघ की राजभाषा नीति और अन्य दायित्वों का नियमित अनुपालन हो रहा है। हिंदी पत्रिका का प्रकाशन भी इन्हीं दायित्वों में से एक है। पत्रिका में निगम के कार्मिकों की रचनाएँ निरंतर प्रकाशित की जा रही हैं जिससे उन्हें अपनी अभिव्यक्ति का एक माध्यम मिला है। पत्रिका का उद्देश्य आरईसी के कार्मिकों में हिंदी में वैचारिक लेखन क्षमता विकसित करना है और मुझे प्रसन्नता है कि पत्रिका अपने उद्देश्यों में सफल रही है। पत्रिका में कई कार्मिकों द्वारा विभिन्न तकनीकी विषयों पर लेख प्रकाशित हुए हैं, जो उत्साहवर्धक है।

किसी भी पत्रिका के प्रकाशन की सफलता उसके पाठकों पर निर्भर करती है और इस संबंध में आप सभी का सहयोग अपेक्षित है। पत्रिका के बारे में आपके सुझाव एवं टिप्पणियाँ सादर आमंत्रित हैं।

पी.पी. सिंह
मुख्य महाप्रबंधक (राजभाषा)

भारत में ग्रीन अमोनिया का भविष्य

वर्तमान दौर में पूरी दुनिया स्वच्छ और टिकाऊ ऊर्जा स्रोतों में संक्रमण की तत्काल आवश्यकता से जूझ रही है, ऐसे समय में हरित अमोनिया एक आशाजनक समाधान के रूप में उभरी है। कार्बन–मुक्त प्रक्रिया के माध्यम से ग्रीन अमोनिया का उत्पादन किया जाता है, जिससे यह विभिन्न उद्योगों को डीकार्बोनाइज करने में एक प्रमुख कारक बन जाती है। भारतीय संदर्भ में, जहां तेजी से औद्योगीकरण और शहरीकरण महत्त्वपूर्ण पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना करते हैं, हरित अमोनिया का भविष्य अपार संभावनाएं रखता है। यह लेख भारत में हरित अमोनिया की संभावनाओं और प्रभावों पर चर्चा करता है, तथा इसके लाभों, चुनौतियों और इसे व्यापक रूप से अपनाने के मार्ग की खोज करता है।

ग्रीन अमोनिया क्या है

अमोनिया, एक रासायनिक यौगिक है जिसमें नाइट्रोजन और हाइड्रोजन शामिल हैं। इसे पारंपरिक रूप से ऊर्जा–गहन हैबर–बॉश प्रक्रिया के माध्यम से उत्पादित किया जाता है, जो जीवाश्म ईंधन पर बहुत अधिक निर्भर करता है। दूसरी ओर, ग्रीन अमोनिया, पानी के इलेक्ट्रोलिसिस और अमोनिया में नाइट्रोजन के बाद के रूपांतरण को

चलाने के लिए अक्षय ऊर्जा स्रोतों, जैसे पवन, सौर, या पनबिजली शक्ति का उपयोग करके संश्लेषित की जाती है। यह प्रक्रिया कार्बन उत्सर्जन को खत्म करती है, जिससे ग्रीन अमोनिया एक स्वच्छ और टिकाऊ विकल्प बन जाती है।

भारत में ग्रीन अमोनिया की क्षमता

ऊर्जा भंडारण और ग्रिड संतुलन

ग्रीन अमोनिया के प्राथमिक लाभों में से एक ऊर्जा वाहक और भंडारण माध्यम के रूप में इसकी क्षमता में निहित है। जैसा कि भारत का लक्ष्य रुक–रुक कर नवीकरणीय ऊर्जा के बड़े हिस्से को अपने ग्रिड में एकीकृत करना है, ग्रीन अमोनिया आपूर्ति और मांग को संतुलित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। पीक अवधि के दौरान उत्पन्न अतिरिक्त नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग ग्रीन अमोनिया के उत्पादन के लिए किया जा सकता है, जिसे बाद में संग्रहित किया जा सकता है और कम उत्पादन या उच्च मांग की अवधि के दौरान वापस बिजली में परिवर्तित किया जा सकता है। ऊर्जा को स्टोर और रिलीज करने की यह क्षमता ग्रीन अमोनिया को ग्रिड को स्थिर करने और निर्बाध बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करने में एक मूल्यवान संपत्ति बनाती है।

औद्योगिक अनुप्रयोग और ईंधन प्रतिस्थापन

भारत का औद्योगिक क्षेत्र, जिसमें रासायनिक, उर्वरक और परिवहन उद्योग शामिल हैं, जीवाश्म ईंधन पर बहुत अधिक निर्भर है। ग्रीन अमोनिया इन उद्योगों को एक स्थायी भविष्य की ओर ले जाने का अवसर प्रस्तुत करती है। अमोनिया का उपयोग थर्मल पावर प्लांटों में कार्बन मुक्त ईंधन के रूप में किया जा सकता है, कोयले की जगह और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, ग्रीन अमोनिया उर्वरकों के उत्पादन के लिए फीडस्टॉक के रूप में काम कर सकती है, जो जीवाश्म ईंधन–व्युत्पन्न अमोनिया पर निर्भर पारंपरिक तरीकों के लिए एक पर्यावरण–अनुकूल विकल्प प्रदान करती है। इन क्षेत्रों में हरित अमोनिया की तैनाती से भारत के कार्बन फुटप्रिंट को महत्त्वपूर्ण रूप से कम करने की क्षमता है।

चुनौतियाँ और बाधाएँ

भारत में ग्रीन अमोनिया का भविष्य आशाजनक है, परंतु इस क्षेत्र में कई चुनौतियाँ और बाधाएँ हैं जिनका व्यापक रूप से समाधान करने की आवश्यकता है।

लागत और बुनियादी ढांचा

ग्रीन अमोनिया उत्पादन सुविधाओं की स्थापना की प्रारंभिक लागत और आवश्यक बुनियादी ढाँचा एक महत्त्वपूर्ण बाधा हो सकता है। वर्तमान में, पैमाने की अपेक्षाकृत कम अर्थव्यवस्थाओं और नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों की लागत के कारण ग्रीन अमोनिया के उत्पादन की लागत इसके जीवाश्म ईंधन–व्युत्पन्न समकक्ष से अधिक है। हालांकि, जैसे–जैसे उत्पादन का पैमाना बढ़ता है और नवीकरणीय ऊर्जा लागत में गिरावट जारी रहती है, ग्रीन अमोनिया की लागत प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार होने की उम्मीद है।

तकनीकी प्रगति

ऊर्जा दक्षता में सुधार और ग्रीन अमोनिया उत्पादन से जुड़ी पूंजीगत लागत को कम करने के लिए इलेक्ट्रोलिसिस तकनीक में और प्रगति आवश्यक है। ग्रीन अमोनिया को आर्थिक रूप से व्यवहार्य बनाने के लिए इलेक्ट्रोलाइजर, उत्प्रेरक और ऊर्जा रूपांतरण प्रक्रियाओं के अनुकूलन पर केंद्रित अनुसंधान और विकास प्रयास महत्त्वपूर्ण हैं।

नीति और नियामक ढांचा

भारत में ग्रीन अमोनिया के विकास को बढ़ावा देने के लिए एक सहायक नीति और नियामक ढांचे का विकास महत्त्वपूर्ण है। प्रोत्साहन, सब्सिडी और अनुकूल नियम हरित अमोनिया परियोजनाओं में निवेश को प्रोत्साहित कर सकते हैं, अनुसंधान और विकास को बढ़ावा दे सकते हैं और मौजूदा उद्योगों में हरित अमोनिया के एकीकरण की सुविधा प्रदान कर सकते हैं।

सरकारी पहल और भागीदारी

ग्रीन अमोनिया की क्षमता को पहचानते हुए, भारत सरकार ने इसके अपनाने को बढ़ावा देने के लिए कई कदम उठाए हैं।

राष्ट्रीय हाइड्रोजन ऊर्जा मिशन

भारत सरकार द्वारा घोषित राष्ट्रीय हाइड्रोजन ऊर्जा मिशन का उद्देश्य भारत में हाइड्रोजन और हरित अमोनिया पारिस्थितिक तंत्र के विकास के लिए एक रोडमैप स्थापित करना है। मिशन इन क्षेत्रों के विकास में तेजी लाने के लिए अनुसंधान और विकास, बुनियादी ढांचे के निर्माण और एक सहायक नीति के ढांचे के निर्माण पर केंद्रित है।

अंतर्राष्ट्रीय सहयोग

भारत ग्रीन अमोनिया प्रौद्योगिकियों में वैश्विक विशेषज्ञता का उपयोग करने के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग और साझेदारी में सक्रिय रूप से जुड़ा हुआ है। जापान, ऑस्ट्रेलिया और जर्मनी जैसे देशों के साथ सहयोगात्मक परियोजनाओं का उद्देश्य हरित अमोनिया उत्पादन में उनकी प्रगति का लाभ उठाना और उनके अनुभवों से सीखना है।

उपसंहार

भारत में ग्रीन अमोनिया का भविष्य महत्त्वपूर्ण विकास के लिए तैयार है क्योंकि देश जीवाश्म ईंधन आधारित ऊर्जा प्रणालियों के लिए स्थायी विकल्प तलाश रहा है। ऊर्जा भंडारण, ग्रिड संतुलन, और विभिन्न उद्योगों में ईंधन प्रतिस्थापन के रूप में अपने संभावित अनुप्रयोगों के साथ, ग्रीन अमोनिया ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने और भारत के स्वच्छ ऊर्जा संक्रमण को चलाने के लिए एक मार्ग प्रदान करती है। जबकि लागत, बुनियादी ढांचे और तकनीकी प्रगति जैसी चुनौतियां बनी हुई हैं, सरकार की पहल और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग हरित अमोनिया के विकास और व्यापक रूप से अपनाने के लिए एक आधार प्रदान करते हैं। इस अभिनव समाधान को अपनाने से, भारत एक स्थायी भविष्य बना सकता है और जलवायु परिवर्तन से निपटने में वैश्विक प्रयासों में योगदान दे सकता है।

गोविंद सैनी
प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)
आरईसी निगम मुख्यालय, गुरुग्राम

हम हैं आरईसी

नया जोश है, नया जुनून है, उजियारी ये नयी सहर है,
नयी हवा है, नयी लहर है, रौशन अब हर गाँव शहर है।

चलते आ रहे कई सालों से, डरते नहीं हम तूफानों से,
अँधेरों का सीना चीर, रोशनी हमने की हासिल।

दिल से कहो, जाँ से कहो, हम हैं आरईसी, हम हैं आरईसी...
"हरित क्रांति" लाई लहराते खेतों में हरियाली।

सहज बीजली से आयी आशाओं की दीवाली,
असीमित है ऊर्जा और संभावनाएं अनंत हैं।

संकल्प से सिद्धि पाना अब हमारा नव मन्त्र है,
दिल से कहो, जाँ से कहो हम हैं आरईसी, हम हैं आरईसी...

नयी डगर है, नयी दिशाएं, दिल में है अरमान नये,
अविरल, अथक, अबाध अपने हौसलों की उड़ान रहे।

गुंजित हो नभ पार तक, हमारे सुंदर काम,
यश फैले, जयवंत हो, भारत बने ऊर्जावान।
दिल से कहो, जाँ से कहो, हम हैं आरईसी, हम हैं आरईसी...

अवनीश भारती
महाप्रबंधक (वित्त एवं लेखा)
आरईसी निगम मुख्यालय, गुरुग्राम

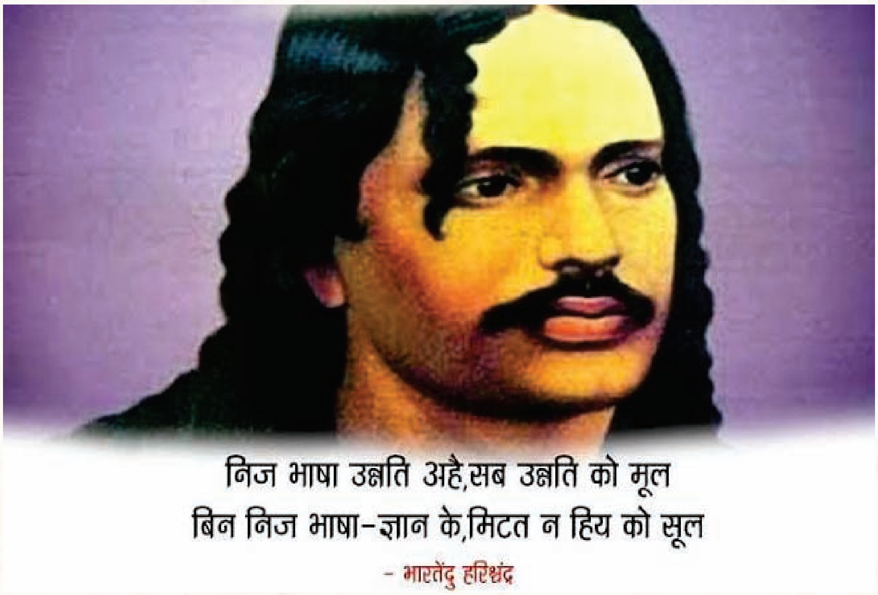

सामाजिक ऋण का भुगतान

(Payback to Society towards contribution of society in journey of life)

जीवन यात्रा में समाज का अहम योगदान होता है चाहे इंसान उसे माने या न माने। कुछ दिन पहले की ही बात है। शाम को कार पूल वाले सहयात्रियों के साथ घर की ओर चला ही था कि साथ में बैठे श्री नरेंद्र सिंधी जी के मोबाइल पर कॉल आया जो उनकी धर्मपत्नी जी का था। वे उन्हें बोल रहे थे काम हो गया है, अपना दिल्ली वाला मकान आज खाली हो रहा है। कुछ दूर जाने के बाद जब उनकी बात समाप्त हो गयी तो मैंने जिज्ञासावश पूछा – क्या हुआ सर मकान खाली होने पर इतनी खुशी, अब तो किराया बंद हो जाएगा जब तक कोई और किरायेदार न मिले। कैसा किराया जी, अपने विद्यार्थी को दिया हुआ था। छः साल पहले अपना मकान उसे रहने के लिए दिया था, काफी गरीब है। किसी कारणवश उससे मकान खाली करवाना पड़ रहा है, पता नहीं अब कहाँ रहेगा बेचारा। ऐसा कहकर सिंधी जी दुःख व्यक्त करने लगे। मैंने कहा – अब तो आप किसी को न देंगे मुफ्त में रहने के लिए। ना जी बिलकुल दूंगा अगर कोई विद्यार्थी जरूरतमंद हुआ तो, जब तक उसकी शिक्षा पूरी ना हो। आखिर समाज का ऋण भी तो चुकाना है।

मैं तो भूल ही गया था कि सिंधी जी एम.एस.डब्ल्यू. (एम.ए.सोशल वर्क) में शिक्षा प्राप्त कर लगभग पैंतीस सालों से समाज सुधार का कार्य कर रहे हैं। वे हमेशा अपने बैग में बिस्कुट का पैकेट रखते हैं ताकि जब भी कोई जरूरतमन्द दिखे तो उसे दे सकें। अनाथ आश्रम के बच्चों को खाना खिलाते हैं। बच्चों को मुफ्त काउंसलिंग/परामर्श देते हैं। मुफ्त प्रशिक्षण देते हैं। ये सब काम तो उनके दिनचर्या का हिस्सा है।

पर क्या वाकई सामाजिक ऋण नाम की कोई चीज होती है। क्या हमारी तरक्की में समाज का भी योगदान है या बस ये सब हमारी ही मेहनत का नतीजा है? ऐसा सोच ही रहा था कि विश्वविद्यालय के एक प्रोफेसर की बात याद आ गई। सन् 2011 में जब अंतिम छमाही खत्म होने ही वाली थी तो एक व्याख्यान के दौरान एक प्रोफेसर ने एक बात कही थी – जब तुम लोग कामयाब बन जाओगे और अच्छे पद पर कार्यरत होगे तो अपने जूनियर छात्रों के लिए अपनी कंपनी को अपने इस कैम्पस में लाना मत भूलना। याद रखना अगर कभी लगे कि इस विश्वविद्यालय ने हमारे लिए किया ही क्या है तो सबसे पहले इस विश्वविद्यालय की जमीन का मूल्य देखना फिर इस विश्वविद्यालय को बनाने में वांछित पूंजी का हिसाब करना। फिर यहाँ पढ़ा रहे प्रोफेसर का योगदान नापना। और अगर इन सबका मूल्य लगा कर उसके एक दिन का ब्याज भी देखोगे तो तुम्हारी एक साल की फीस (जो केवल तेरह हजार रुपये सालाना थी) से भी कई गुना ज्यादा पाओगे।

बात तो सही है यदि ये व्यवस्था न होती तो क्या हम कभी इस मुकाम को पाने की कोशिश भी करते। सबसे आगे रहने की होड़ तो जीवन जीने का तरीका ही है, यदि किसी और क्षेत्र में भी कामयाब होना होता तब भी शायद कम से कम इतना प्रयास तो वहाँ भी करना पड़ता।

कुछ दिन बाद जब दफ्तर आते समय एक जाम में फंस कर निकले तो पता चला कि कुछ भले लोगों ने पहल करके ये जाम खुलवाया है नहीं तो जहां ये जाम आधे घंटे में खुला है वहाँ कम से कम दो घंटे और लगते। यदि ये लोग अपना सामाजिक कर्तव्य समझ कर जाम न खुलवाते तो परिस्थिति शायद और कष्टदायक होती। उस दिन ये तो समझ आ गया की परस्पर सहयोग से ही जीवन को आसान बनाया जा सकता है। यदि हम किसी का सहयोग पाकर खुश होते है तो सहयोग करना भी हमारा कर्तव्य है किन्तु जीवन की इस दौड़ में हम भूल जाते हैं कि हमारे भी कुछ सामाजिक ऋण हैं।

कुछ दिनों के बाद, जब हम दफ्तर से घर जा रहे थे तो कार के पीछे से एक एंबुलेंस जा रहा था। हमारे सहयात्री ने कार एक तरफ लगा दी ताकि एंबुलेंस आसानी से जल्दी आगे चला जाये। इस पर एक दूसरे सहयात्री बोले की एंबुलेंस तो खाली था बेवजह ही आपने परेशानी

झेली। पहले सहयात्री का ये जवाब सुनकर फिर कोई कुछ न बोल पाया कि शायद एंबुलेंस किसी को लेने जा रहा हो। कुछ मामलों में शायद तर्क वितर्क किए बिना अपना सामाजिक कर्तव्य मान कर कार्य कर देना चाहिए चाहे फिर खाली एंबुलेंस रोगी को घर छोड़कर वापस अस्पताल ही क्यों न जा रहा हो। उस दिन ये बात भी समझ आ गयी कि समाज हमे बिना पता लगे भी हमारे लिए काफी कुछ करता है जो किसी ऋण से कम नहीं।

अभी कुछ ही दिन पहले की बात है कि मेरे कारपूलिंग के एक सहयात्री (श्री के. के. शर्मा जी) उस दिन दफ्तर के लिए साथ नहीं आए थे। पूछने पर पता चला कि अपनी भांजी के यहाँ भात देने गए हैं। इसी बात पर वार्तालाप की एक लहर चल पड़ी। आखिर रिश्तेदारी भी तो हमारे सामाजिक ऋणों का ही एक हिस्सा है। हमारी बचत का एक बड़ा हिस्सा इसी ऋण को चुकाने में चला जाता है। बातों की लहर में आगे बढ़ते हुए एक सहयात्री (श्री संजय गर्ग जी) बोले कि भात तक तो ठीक है मेरे पिता जी ने तो हमें बचपन से ये सिखा रखा है कि अगर किसी रिश्तेदार को पैसा मांगने पर पैसा दो तो कभी वापस मत मांगना सोचना पिछला ऋण था जो आज चुका दिया। अगर पैसा मांगे बिना आ जाए तो बहुत अच्छा नहीं तो भूल जाओ। ये सुनते ही कुछ विरोध तो होना ही था। कैसी बात करते हो संजय जी, भला हमारी बचत पर रिश्तेदार का हक कैसे। बस ये सुनते ही संजय जी मुस्कुरा दिए और बोला पता नहीं जी भगवान किसके हक का किस रूप में दे रहा है। नेकी कर दरिया में डाल।

सामाजिक ऋणों के बारे में सोचता हूँ तो एक किस्सा याद आता है जो कभी किसी ने सुनाया था – एक बार एक आदमी एक संत के पास जाकर पूछता है कि गुरुजी एक माह पहले मेरे पिताजी का स्वर्गवास हुआ था एक वृद्धाश्रम में। तो बस यही पूछना था कि जब किसी का देहांत वृद्धाश्रम में हो तो कितने दिन का सूतक लगता है। गुरुजी ने बड़े शांत स्वभाव से उत्तर देते हुए बोले कि जिस घर से माता पिता वृद्धाश्रम चले जाते हैं उस घर में जीवन भर का सूतक लग जाता है इसीलिए ये सब मत देखो जो काम करना चाहते हो कर लो। शायद इसीलिए कहा जाता है कि बोया पेड़ बबूल का तो आम कहां से होय।

इन सभी घटनाओं से ये बात ही सामने आती है कि वाकई हमारे जन्म से लेकर पूरे जीवन यापन में समाज का बहुत बड़ा योगदान रहता है और हमें अपना कर्तव्य समझ कर इस सामाजिक ऋण को चुकाने का प्रयास करते रहना चाहिए।

कुंदन लाल
प्रबंधक (तकनीकी)
आरईसी निगम मुख्यालय, गुरुग्राम

आरईसी REC
असीमित ऊर्जा, अनन्त संभावनाएं
Endless energy. Infinite possibilities.

महंगाई एक ऐसा खेल है जिसे आपको खेलना ही पड़ेगा!

Inflation is a game which you play whether you wish to or not!

अगर महंगाई एक खेल होती तो क्या होता? या यह पहले से ही एक खेल है? इस लेख में आपको महंगाई पर थोड़ा अलग नजरिया पेश किया जाएगा। महंगाई एक ऐसा खेल है जो बाजार द्वारा आपके साथ अपने आप ही लगातार खेला जा रहा है, आप खेलना चाहे या नहीं! पिछले साल जो सब्जी 100 रुपये किलो थी, इस साल 110 रुपये किलो हो गई है। पिछले साल आपकी पसंदीदा बाइक की कीमत 1,00,000 थी लेकिन अब इसकी कीमत 1,05,000 है। पिछले साल आपके सपनों की ट्रिप की कीमत 2,00,000 थी लेकिन अब यह 2,25,000 है। यह लिस्ट और लंबी होती जाएगी जैसे जैसे आप इस पर सोचना शुरू करेंगे, लेकिन क्या आप उस विषय को समझ रहे हैं जिसे हम यहां प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहे हैं।

महंगाई का यह कैसा खेल है? Its like a game of Tom and Jerry between Inflation and Your Finances! Mr. X और उनकी वित्तीय स्थिति का निम्नलिखित उदाहरण लें!

कुल आय – रु. 10,00,000

कुल खर्च – रु. 6,00,000

कुल बचत – रु. 4,00,000

अब मान लें कि अगले वर्ष के लिए महंगाई की दर 10% है जबकि

उनकी आय में केवल 6% की वृद्धि होती है। इसलिए अगले वर्ष के लिए Mr. X की वित्तीय स्थिति के आंकड़े इस प्रकार होंगे:

कुल आय – रु. 10,60,000

कुल खर्च – रु. 6,60,000

कुल बचत – रु. 4,00,000

अब यहाँ दो बातें महत्वपूर्ण हैं: जबकि आय में % वृद्धि (अर्थात् 6%) खर्चों में % वृद्धि (10%) से कम थी, फिर भी Mr. X उतनी ही राशि अर्थात रुपये बचाने में सक्षम थे अर्थात रु. 4,00,000, इसे Base Effect कहा जाता है। आय का Base, व्यय के Base से अधिक था और इसलिए बचत राशि समान है। अब हम दो उदाहरणों की सहायता से Base Effect की अवधारणा को सरल करेंगे। यहाँ एक Billionaire के उदाहरण पर विचार करें जैसे कि मुकेश अंबानी। हो सकता है कि वह अपनी पूरी नेटवर्थ बचत खाते में डाल दे और कुछ भी न करें, फिर भी बचत खाते से होने वाली कमाई उनके खर्चों से कहीं अधिक होगी।

हालांकि एक गरीब मजदूर महंगाई के एक–एक प्रतिशत अंक की चुभन महसूस करता है क्योंकि अपनी मामूली कमाई से वह अपने परिवार की जरूरतों को पूरा करने में सक्षम नहीं होता है। इसलिए महंगाई अमीरों के लिए वरदान और गरीबों के लिए अभिशाप है क्योंकि यह गरीबों के धन को अमीरों की ओर ले जाती है!

क्या आपको कोविड के उस समय की याद आती है जब महंगाई आसमान छू रही थी और गरीबों के लिए कोई आय नहीं थी? जबकि अमीरों के पास Debt/Equity/Real Estate के माध्यम से उनकी संपत्ति उनके लिए काम कर रही थी।

यह रॉबर्ट कियोसाकी की पुस्तक Rich Dad Poor Dad की प्रमुख शिक्षाओं में से एक है। दोनों वर्षों में कुल बचत समान थी अर्थात रु. 4,00,000 लेकिन 4,00,000 रुपये की कीमत 1 वर्ष पहले और आज अलग हैं। This is because of the concept of "Time Value of Money".

उसी 4 लाख रुपये के साथ, आप एक साल पहले की तुलना में कोई भी चीज कम मात्रा में खरीद सकेंगे। उतनी ही मात्रा में खरीदारी करने के लिए उसकी आय को महंगाई की दर से 10% यानी रु. 4,40,000 तक बढ़ाना पड़ेगा, तो अंततः Mr. X 40,000 रुपये से गरीब हैं उस वर्ष के लिए । इसे Money Erosion Effect कहा जाता है।

"The value of the money reduces with each passing year] if the same has not been compounded with the pace of inflation-" एक खेल की तरह नहीं लगता है ? It feels like inflation is saying that i am going to erode the value of your hard&earned money whether you like it or not- It is in your hands whether you can beat me or get beaten by me ¼You are forced to play with him whether you like it or not).

पैसा नकद में रखना – महंगाई की जीत, Mr. X हारे। FD/Debt में पैसा रखें – महंगाई के समान रिटर्न अर्जित करें। इक्विटी में पैसा रखें (Long Term) – Mr. X की जीत, महंगाई की हार। पैसे को सोने/रियल एस्टेट में रखें – महंगाई से थोड़ा बेहतर रिटर्न। ठीक है अब हम समझते हैं कि महंगाई वास्तविक है। इसलिए अब हम महंगाई के Cause and Effects को देख सकते हैं! महंगाई का कारण (Cause) तो जगजाहिर है।

- Demand/Supply का खेल – जितनी अधिक Demand, उतनी ही अधिक कीमत और इसके विपरीत जितनी अधिक Supply, उतनी ही कम कीमत।
- अर्थव्यवस्था में धन की Supply– धन की Supply जितनी अधिक होगी, महंगाई उतनी ही अधिक होगी और इसके विपरीत
- आर्थिक स्थितियां
- सरकारी नीतियां
- महंगाई के Effects क्या हैं?
- Reduced Purchasing Power – आपका पैसा उस मात्रा से कम खरीदता है जिसे आप पहले खरीद सकते थे।
- Increase in Borrowing Costs – महंगाई में वृद्धि के साथ, केंद्रीय बैंक ब्याज दरों में वृद्धि करता है और इसलिए उधार लेने की लागत में वृद्धि होती है।
- Economic Distortions – कोई भी राष्ट्र जो आर्थिक रूप से नीचे जाता है, उसके आम तौर पर दो प्राथमिक कारण होते हैं :
- High Inflation
- Unemployment

ठीक है अब हम महंगाई के Cause and Effects और महंगाई के खेल के नियमों को भी समझते हैं।

हमें कैसे खेलना चाहिए ताकि हम महंगाई को बार–बार हरा सकें?

जबकि हम महंगाई के खेल को नियंत्रित या बाहर नहीं कर सकते हैं, हम इसके प्रभाव को प्रभावी ढंग से नेविगेट करने के लिए रणनीतियों को नियोजित कर सकते हैं। खैर सबसे पहले यह समझें कि महंगाई असल में है। Inflation is here to stay! एक बार जब यह रास्ते से हट जाती है, तो नीचे दिए गए बिंदु कुछ First Principle में हो सकते हैं, जिनके आधार पर हम अपनी वित्तीय यात्रा की योजना बना सकते हैं।

- Budget / Save / Invest – अपनी आय और व्यय का track रखें। एक बार जब आप ऐसा कर लेते हैं, तो आप अपनी बचत और निवेश की योजना बना सकते हैं।

इसके लिए कोई भी इंसान निम्नलिखित दो नियमों का पालन कर सकता है:

- नियम 1: अपनी आय का कम से कम 30% बचाएं। उच्चतर बेहतर।
- नियम 2: आपकी उम्र। अगर आपकी उम्र 30 साल है तो आपको Equity में कम से कम 70 फीसदी (100–30) निवेश करना चाहिए।

इसलिए यदि आप 50,000 प्रति माह वेतन कमा रहे हैं और आपकी

आयु 30 वर्ष है, आपको कम से कम 30% रुपये की बचत करनी चाहिए यानी रु 15,000 और उस रुपये का कम से कम 70% यानि रु 10,500 Equity में हर महीने निवेश करना चाहिए।

- आय के कई स्रोत बनाएं – आय के एक स्रोत पर अत्यधिक निर्भर होना आपको परेशान कर सकता है यदि वह एक धारा बंद हो जाती है। इसलिए भले ही आप salaried हों – धीरे–धीरे लगातार निवेश का alternate portfolio बनाएं।
- एसेट एलोकेशन: अब जब हम समझ गए हैं कि हमें उनके खेल में महंगाई को मात देने की जरूरत है, तो हमें खुद को पहले समझने की जरूरत है। Personal Finance पे Personal for a reason. अपने आप को समझो। आप जो जोखिम उठा सकते हैं उसे समझें। Return Expectations को समझें। आप जिस एसेट क्लास में निवेश करना चाहते हैं, उसे समझें। अंत में अपने निवेश को इस तरीके से allocate करें जो आपको inflation beating return प्रदान कर सके।

- Maintain a Long Term perspective – यह समझें कि महंगाई आपके खिलाफ जीवन भर खेल खेल रही है।

यह एक टेस्ट मैच की तरह है। मैच के कुछ सत्र आप जीत जाते हैं, मैच के कुछ सत्र महंगाई जीत जाती है। हालाँकि अंतिम जीत का फैसला इस बात से होता है कि कौन अधिक सत्र जीतता है। आपकी आय या पोर्टफोलियो सभी वर्षों में महंगाई को मात देने में सक्षम नहीं हो सकती है, हालांकि यह महत्वपूर्ण है कि वह उन्हें अधिक से अधिक बार हरा दें।

I hope this helps you builds a perspective on your financial journey-

पार्थ शाह
उप प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)
आरईसी निगम मुख्यालय, गुरुग्राम

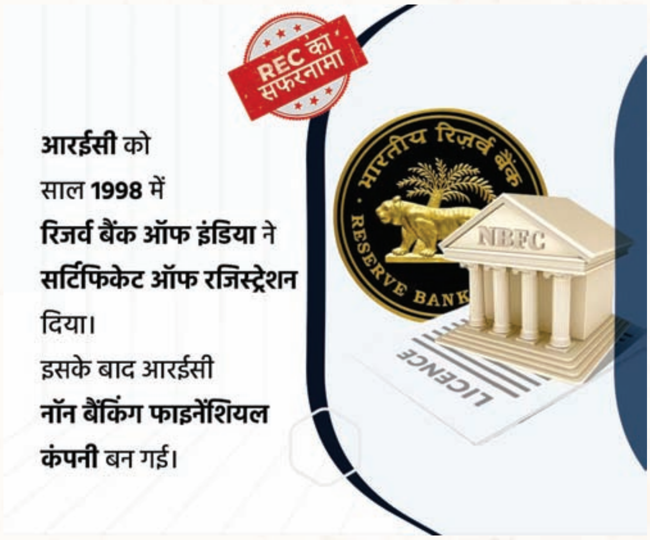

स्मार्ट प्रीपेड मीटरः एक उपभोक्ता के दृष्टिकोण से

हम अपनी कई दैनिक जरूरतों के लिए बिजली का उपयोग करते हैं, फिर चाहे वो रौशनी के लिए या फिर विद्युत उपकरणों जैसे फ्रिज, ए. सी., टीवी, माइक्रोवेव ओवन इत्यादि को चलाने के लिए या फिर इलेक्ट्रिक वाहन को चार्ज करने के लिए। किसी क्षेत्र विशेष में विद्युत आपूर्ति की जिम्मेदारी एक विद्युत वितरण कंपनी (DISCOM) की होती है, जिसके पास उस क्षेत्र का विद्युत वितरण लाइसेंस होता है। बिजली की खपत को मापने के लिए आमतौर पर उपभोक्ता के घर अथवा परिसर में एक इलेक्ट्रॉनिक मीटर लगाया जाता है। मीटर बिजली की खपत को किलोवॉट–ऑवर या यूनिट में अंकित करता है। प्रत्येक माह के अंत में, एक मीटर रीडर बिजली की खपत को लिखता है और तदनुसार बिजली के उपयोग व लागू टैरिफ दरों के हिसाब से एक बिल उपभोक्ता को भेज दिया जाता है। इस तरह एक उपभोक्ता बिजली का उपयोग करता है, जिसके एवज में उसे बिजली बिल का दी गयी समयावधि में भुगतान करना पड़ता है।

संशोधित वितरण क्षेत्र योजना (Revamped Distribution Sector Scheme or RDSS) के अंतर्गत भारत सरकार ने मार्च–2025 तक 25 करोड़ इलेक्ट्रॉनिक मीटरों को स्मार्ट प्रीपेड मीटर से बदलने का लक्ष्य निर्धारित किया है, ताकि बिजली कंपनियों के प्रचालन एवं वित्तीय दक्षता को सुधारा जा सके। कैसे स्मार्ट प्रीपेड मीटर एक बिजली कम्पनी और उपभोक्ता के बीच मौजूदा संबंध को प्रभावित करता है? और इसका उपभोक्ता के जीवन में क्या असर होगा? आइए समझते हैं।

❖ **बिजली बिल में पारदर्शिता**

मौजूदा समय में मीटर रीडिंग लेने के लिए मीटर रीडर घर–घर जाते हैं और यह एकत्रित जानकारी विद्युत वितरण कंपनी (DISCOM) के बिलिंग सॉफ्टवेयर में डाली जाती है ताकि बिल बनाया जा सके। मैन्युअल तरीके से ली गयी मीटर रीडिंग के कारण गलत या फिर बेहिसाब बिल की शिकायतें पैदा होती हैं। कभी–कभी मीटर रीडिंग उपलब्ध न होने की स्थिति में बिजली कंपनियां औसत बिल भी बना देती हैं। सीमित जानकारी के कारण बमुश्किल ही कोई उपभोक्ता मीटर रीडिंग की ठीक ढंग से जाँच कर पाता है, अन्यथा बिल के अनुरूप ही भुगतान कर देता

है । बिजली बिल की शिकायतें उपभोक्ताओं में असंतोष का एक मुख्य कारण हैं।

इलेक्ट्रॉनिक मीटर के विपरीत, स्मार्ट मीटर बिजली खपत की जानकारी संचार तंत्र के माध्यम से बिना मानवीय हस्तक्षेप के सीधे सर्वर को भेज देता है। स्मार्ट मीटर के अलावा बिजली कंपनी एक आसान मोबाइल एप्प उपलब्ध कराती है जो केंद्रीय सर्वर से एकीकृत रहती है। उपभोक्ता मोबाइल ऐप को अपने स्मार्टफोन में डालकर आसानी से अपनी हर दिन की बिजली खपत पर नजर रख सकते हैं। इस तरह स्मार्ट मीटर बिजली बिल में पारदर्शिता लाएगा क्योंकि उपभोक्ता अब आसानी से जान सकेंगे कि वह कितनी खपत पर कितना भुगतान कर रहे हैं। हालांकि बिजली कंपनी को जरूरत है कि वह उपभोक्ताओं को मोबाइल एप्प के उपयोग व बिजली बिल के विभिन्न प्रभारों के बारे में जानकारी मुहैया कराए। यह उपभोक्ता–प्रशिक्षण व ऑनलाइन ज्ञानवर्धक वीडियो इत्यादि के माध्यम से हासिल किया जा सकता है।

❖ **स्वीकृत भार एवं संबंधित नियत प्रभार पर नियंत्रण**

किसी भी उपभोक्ता को बिजली का कनेक्शन एक पूर्वनिर्धारित स्वीकृत भार (Sanctioned Load) के अनुसार दिया जाता है, जिसे किलोवॉट में दर्शाया जाता है। स्वीकृत भार के हिसाब से एक नियत प्रभार बिजली बिल में जोड़ दिया जाता है। मीटर हर माह की अधिकतम मांग (Maximum Demand or MD) को अंकित करता है और यदि अधिकतम मांग स्वीकृत भार से ज्यादा रहती है, तो नियत प्रभार के अतिरिक्त एक अर्थदंड या जुर्माना बिजली बिल में जोड़ दिया जाता है। मीटर डेटा तक सीमित पहुँच के कारण, उपभोक्ता यह समझ पाने में अक्षम रहते हैं कि क्यूँ उनका बिजली बिल ज्यादा आया? या किस समय उन्होंने स्वीकृत भार का उल्लंघन किया?

स्मार्ट मीटर और सम्बन्धित मोबाइल एप्प के उपयोग से उपभोक्ता अपनी मासिक अधिकतम माँग पर नजर रख सकते हैं और यदि जरूरत हो तो, स्वीकृत भार को ज़्यादा अथवा कम करने के लिए बिजली कंपनी में आवेदन दे सकते हैं।

❖ **प्रीपेड व्यवस्था**

वर्तमान में बिजली बिल का भुगतान पोस्टपेड तरीके से किया जाता हैं, यानि उपभोक्ताओं को पहले बिजली के उपयोग की अनुमति है और तत्पश्चात उन्हें मासिक खपत अनुसार बिजली बिल का भुगतान करना होता है। इस व्यवस्था में उपभोक्ताओं को बिल के भुगतान हेतु एक लम्बी ऋण अवधि (Credit Period) मिल जाती है।

इसके विपरीत, प्रीपेड व्यवस्था 'भुगतान करें और उपयोग करें' के तरीके से काम करती है, यानि उपभोक्ता को पहले रीचार्ज करना होता है और तब वह बिजली का उपयोग कर सकता है। इस तरह उपभोक्ता को बिजली बिल के भुगतान के लिए किसी प्रकार की ऋण अवधि का लाभ नहीं मिलता है। जब भी बैलेंस एक तय सीमा से कम हो जाता है, तो उपभोक्ता को अतिरिक्त रीचार्ज करने के लिए एक अलर्ट भेज दिया जाता है। लेकिन यदि उपभोक्ता समय रहते रीचार्ज नहीं करता है और बैलेंस पूरी तरह समाप्त हो जाता है, तो स्मार्ट प्रीपेड मीटर के अंदर मौजूद एक रिले केंद्रीय सर्वर से कमांड मिलने पर बिजली कनेक्शन काट देती है। स्मार्ट मीटर कनेक्टेड है या डिस्कनेक्टेड, यह जानकारी मोबाइल ऐप अथवा मीटर डिस्प्ले को देखकर प्राप्त की जा सकती है।

अतः प्रीपेड व्यवस्था में उपभोक्ता को रीचार्ज बैलेंस बनाये रखना होता है, ताकि विद्युत आपूर्ति निर्बाध रहे। परन्तु इन नुकसानों के बावजूद भी, क्यूँ एक उपभोक्ता पोस्टपेड की बजाय प्रीपेड व्यवस्था को अपनाये। इस संदर्भ में कुछ विवेकपूर्ण तर्क इस प्रकार हैं:

1) प्रीपेड व्यवस्था में बैलेंस प्रतिदिन घटता है। इसीलिए एक उपभोक्ता आसानी से अपनी बिजली खपत को बैलेंस में आयी दैनिक कटौती से समझ सकता है, जैसे कि क्यूँ किसी दिन बैलेंस ज्यादा या कम कटा।

2) उपभोक्ता विद्युत उपकरणों के उचित उपयोग के लिए प्रेरित होगा और वह अपनी दैनिक बिजली खपत को कम करने के लिए सूक्ष्म रूप से योजना बना सकता है।

3) प्रीपेड व्यवस्था में उपभोक्ता को छोटे रीचार्ज करने की स्वतंत्रता मिलती है, जैसे कि 100 या 200 रुपये, जबकि पोस्टपेड व्यवस्था में मासिक खपत के एवज में थोक अदायगी माँगी जाती है। यह विशेष रूप से कम आय वाले और गरीब उपभोक्ताओं के लिए लाभदायक है।

4) बिजली कंपनियां स्मार्ट प्रीपेड मीटर के माध्यम से विद्युत आपूर्ति लेने वाले उपभोक्ताओं को साधारणतया 2–5% की छूट बिजली बिल पर प्रदान करती हैं।

❖ **रिमोट कनेक्शन व डिसकनेक्शन**

वर्तमान में यदि बिजली कनेक्शन जोड़ना या काटना होता है, तो बिजली कंपनी के संबंधित कर्मचारी या लाइनमैन की मौजूदगी आवश्यक होती है। हालाँकि स्मार्ट प्रीपेड मीटर में बिना किसी मानवीय हस्तक्षेप के रिमोट कनेक्शन व डिसकनेक्शन की विशेषता मौजूद है। यह उपभोक्ताओं में कुछ आशंकायें पैदा कर सकता है, जैसे कि यदि बिजली शाम या रात को कट जाए तो क्या होगा? क्या होगा यदि नेटवर्क की अनुपलब्धता के कारण रीचार्ज ना हो पाए? या फिर रीचार्ज हो जाने के बावजूद केंद्रीय सर्वर से कमांड ना मिलने पर मीटर कनेक्शन ना जुड़े? यह सभी प्रश्न जायज हैं और इनका समाधान करना अत्यंत आवश्यक है। बिजली कंपनियां उपभोक्ताओं की सुविधा के लिए निम्नलिखित उपाय कर सकती हैं:

1) बिजली कंपनियां कुछ विशेष समयावधि (Happy Hours) में मीटर डिसकनेक्शन को छूट दे सकती हैं, जैसे कि सांय 5

बजे से सुबह 10 बजे तक एवं शासकीय अवकाश पर, ताकि उपभोक्ताओं को परेशानी ना हो और वे मीटर का रीचार्ज करा सकें।

2) आरडीएसएस के अंतर्गत मानक अनुबंधों में स्मार्ट प्रीपेड मीटर के सभी प्रदर्शन आधारित पहलुओं के लिए सर्विस लेवल एग्रीमेंट (Service Level Agreement or SLA) उल्लेखित है, जिसमें कि एक नियत समयावधि में मीटर कनेक्शन की कमांड को निष्पादित करना भी शामिल है। इन नियमों के गैर–अनुपालन पर स्मार्ट मीटर सेवा प्रदाता (AMI Service Provider or AMI&SP) पर जुर्माना लगाने का प्रावधान है।

3) स्मार्ट मीटर सेवा प्रदाता को क्षेत्र में कर्मचारी तैनात करने होंगे, जो स्मार्ट प्रीपेड मीटर को नेटवर्क की अनुपलब्धता में कनेक्ट करें। हालाँकि यह समाधान श्रमपूर्ण एवं समय उपभोगी है और इससे केवल सीमित कनेक्शन करना ही व्यवहारिक रूप से संभव है।

4) विफल नेटवर्क की स्थिति में स्मार्ट प्रीपेड मीटर को स्थानीय स्तर पर कनेक्ट करने के लिए एज कंप्यूटिंग तकनीकी (Edge Computing Technology) या अन्य सूचना प्रौद्योगिकी/प्रचालन तकनीकी (IT/OT) आधारित साधनों के उपयोग से एक तंत्र विकसित और कार्यान्वित किया जाये, जैसे कि टोकन आधारित प्रीपेड मीटरों में होता है। इस प्रकार के मीटर सामान्यतः बहुमंजिला इमारतों में लगाए जाते हैं और उपभोक्ता रीचार्ज से मिले एक टोकन को मीटर में दाखिल कर आसानी से मीटर को कनेक्ट कर सकते हैं।

❖ **टैरिफ से सम्बंधित पहलू**

भारत में ज्यादातर बिजली कंपनियों में टेलीस्कोपिक टैरिफ प्रचलित है, जिसमें कि शुरुआती खपत जैसे ०–१०० यूनिट तक कम अथवा शून्य टैरिफ लागू होता है और उसके बाद जैसे–जैसे खपत बढ़ती है, तो अपेक्षाकृत ज्यादा टैरिफ लगता है। इस तरह की टैरिफ संरचना की वजह से उपभोक्ता को पूरे महीने के दौरान हुई दैनिक बैलेंस कटौती को समझने में चुनौती महसूस होती है। महीने के शुरुआत में तो प्रतिदिन बैलेंस कटौती दर कम रहती है और बाद में जैसे–जैसे कुल खपत बढ़ती है, तो बैलेंस कटौती दर भी बढ़ जाती है। इस तरह महीने के शुरुआत में कराया गया बैलेंस ज्यादा दिन तक चलता है और बाद में कराया गया बैलेंस जल्दी खत्म हो जाता है। अतः एक उपभोक्ता के लिए अपने दैनिक या मासिक खर्च को तय करने में परेशानी होती है। इसके अलावा उपभोक्ता के मन में बेहिसाब बिल की धारणा बन सकती है, जबकि वास्तव में ऐसा नहीं है।

इसलिए आज टैरिफ सुव्यवस्थितीकरण (Tariff Rationalisation) एक अहम जरूरत है ताकि विभिन्न खपत सीमाओं में टैरिफ लगभग एक समान हो । विद्युत मंत्रालय, राज्य विनियामक आयोगों, बिजली कंपनियों और अन्य सम्बंधित एजेंसियों को मिलकर एक प्रीपेड अनुकूल टैरिफ सरंचना तैयार करने की आवश्यकता है।

❖ **स्मार्ट प्रीपेड मीटर के सह–लाभ**

उपरोक्त फायदों के अतिरिक्त, उपभोक्ता के परिपेक्ष में स्मार्ट प्रीपेड मीटर से जुड़े कुछ सह–लाभ हैं, जो कि निम्नलिखित हैं:

1) **मीटर में छेड़छाड़ और बिजली की चोरी में कमी:** स्मार्ट प्रीपेड मीटर के साथ एडवांस्ड एनेलिटिक्स सॉफ्टवेयर उपयोग कर बिजली कंपनियां आसानी से मीटर छेड़छाड़ और बिजली चोरी के मामलों को पकड़ सकती हैं और नियमानुसार कार्रवाही कर सकती हैं । जिससे विद्युत आपूर्ति की आधारभूत संरचना पर बेहिसाब बोझ को हटाने में मदद मिलेगी तथा विद्युत उपकरणों जैसे ट्रांसफॉर्मर, लाइन्स इत्यादि की सेवा आयु बढ़ेगी । इसका सीधा लाभ उपभोक्ताओं को अनियोजित विद्युत विफलताओं (Unplanned Power Outage) में होने वाली कमी के रूप में मिलेगा ।

2) **उन्नत गुणवत्ता की विद्युत आपूर्तिः** स्मार्ट मीटर के डेटा की मदद से बिजली कंपनियां बेहतर तरीके से बिजली

लेख

खरीद का पूर्वानुमान कर सकती हैं, जिससे कि बिजली आपूर्ति गुणवत्तापूर्ण होगी और अधिक या कम वोल्टेज की समस्याओं में कमी आएगी।

3) **विद्युत उपकरणों का बेहतर रखरखाव:** स्मार्ट मीटर विद्युत वितरण नेटवर्क की मौजूदा स्तिथि के बारे में जानकारी केंद्रीय सर्वर को प्रदान करते हैं, अतः स्मार्ट मीटर डेटा के प्रयोग से विद्युत वितरण नेटवर्क के निवारक (Preventive) व व्यवधान (breakdown) सम्बन्धी रखरखाव का आसानी से व त्वरित प्रबंधन किया जा सकता है। इससे उपभोक्ताओं को निर्बाध विद्युत आपूर्ति मिल सकेगी।

❖ **मीटर लागत का भार**

कोई उपभोक्ता स्मार्ट प्रीपेड मीटर तो लगवाना चाहता है, परन्तु बिना किसी वित्तीय बोझ के। बिजली कंपनियों को जरूरत है कि वो बिना किसी अतिरिक्त लागत के उपभोक्ताओं को स्मार्ट प्रीपेड मीटर उपलब्ध करायें। स्मार्ट प्रीपेड मीटर के उपयोग से बिजली कंपनियों की 'सकल तकनीकी व वाणिज्यिक हानियाँ' (AT-C Losses) और 'आपूर्ति की औसत लागत व औसत वसूली योग्य राजस्व में अंतर' (ACS-ARR Gap) में कमी अपेक्षित है। इसीलिए स्मार्ट प्रीपेड मीटरों का वित्तपोषण बिजली कंपनियों की उन्नत प्रचालन व वित्तीय दक्षता द्वारा किया जाना चाहिए।

उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि स्मार्ट प्रीपेड मीटरों का कार्यान्वयन उपभोक्ताओं के इर्द–गिर्द घूमता है और इसलिए स्मार्ट मीटर योजना की सफलता उपभोक्ताओं की चुनौतियों व समस्याओं का समयोचित समाधान करने में निहित है। यह अत्यंत जरूरी है कि उपभोक्ताओं को योजना का हिस्सा बनाया जाये, उन्हें स्मार्ट प्रीपेड मीटर के लाभों से अवगत कराया जाये, उनकी परेशानियों को सुलझाया जाये तथा व्यापक जागरूकता अभियान के द्वारा उनके मन में स्मार्ट प्रीपेड मीटर के प्रति सकारात्मक धारणा विकसित किया जाए।

राहुल गुप्ता
प्रबंधक (तकनीकी)
आरईसी निगम मुख्यालय, गुरुग्राम

कविता

आखिरी ख्वाहिश

पूरी जिंदगी गुजार दी है मैंने अपनी
किसी के सपने को अपनी ख्वाहिश बनाके
अब आलम ऐसा है कि उसके सपनों में भी आने के लिए
बैठे हैं अकेले में हम अपनी आखों की रोशनी गंवा के।
हाथ पकड़ के जिसको चलाना सिखाया था
आज उसके साथ चलने में डरते हैं हम।
सारा दौलत लुटाके जिसको ज्ञान की पूंजी दी थी
आज उसके सामने अनपढ़ गवार हैं हम ।
कांधे पर बिठाके जिसको दिखाये थे
मेरे सीमित दुनिया के अनमोल नजारे ।
आज अंतिम घड़ी में बैठे हैं उसी के इंतजार में
एक अंधेरी कोठरी में एक लकड़ी के सहारे ।
मालुम है वो आज कल व्यस्त होगा बहुत
मेरे पास आने के लिए उसे समय नहीं मिलेगा ।
अब उसके इंतजार में जीवन के इस मुकाम पे
यम और यमदुत से कितनी देर तक और लड़ पाउंगा ।
अब जा रहा हूं मैं इस ख्वाहिश में की शायद
मरने के बाद एक बार उसकी यादों में आ पाऊँगा।

लक्ष्येश्वर पांडा
प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)
आरईसी क्षेत्रीय कार्यालय, भुवनेश्वर

आरईसी
REC
असीमित ऊर्जा, अनन्त संभावनाएं
Endless energy. Infinite possibilities.

लेख

गोबरधन : स्वच्छ एवं ऊर्जावान भारत की ओर एक कदम

गैल्वनाइजिंग ऑर्गेनिक बायो–एग्रो रिसोर्सेज धन (GOBARdhan) योजना को स्वच्छ भारत मिशन के तहत वर्ष 2018 में लॉन्च किया गया। इस योजना का उद्देश्य एक ओर तो जैविक कचरे का उचित प्रबंधन है जिससे कि हमारा वातावरण स्वच्छ रहे तो दूसरी ओर बायो गैस के माध्यम से किसानों की आय में वृद्धि करना है "दुनिया में मवेशियों की सबसे बड़ी आबादी भारत में है" भारत एक कृषि प्रधान देश है और यहाँ की अधिकांश जनसंख्या गांवों में निवास करती है जिनका मुख्य व्यवसाय कृषि है ऐसे में मवेशी के गोबर, फसल अवशेषों का प्रबंधन हमारे लिए एक महत्त्वपूर्ण चुनौती है, पराली जलाने से पर्यावरण को हो रहे नुकसान के हम सभी प्रत्यक्षदर्शी हैं। गोबरधन योजना इस चुनौती को आय का स्रोत बनाने का मौका देती है। यह योजना मवेशी के गोबर, फसल अवशेषों और अन्य जैविक कचरे का उपयोग करके जैविक उर्वरक, बायोगैस और बायो–सीएनजी उत्पादन का सामर्थ्यवान विकल्प प्रदान करती है। इसका उद्देश्य बायोगैस/कंप्रेस्ड बायो गैस (सीबीजी) संयंत्रों की स्थापना के लिए एक मजबूत पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करना, सतत आर्थिक विकास को बढ़ावा देना और एक समृद्ध अर्थव्यवस्था की स्थापना को बढ़ावा देना है।

बायोगैस का उपयोग खाना बनाने में कर सकते हैं जिससे LPG पर निर्भरता कम होगी और आर्थिक बचत भी होगी। इसका उपयोग विद्युत उत्पादन के लिए भी किया जा सकता है जिससे स्थानीय क्षेत्रों में बिजली की आपूर्ति की जा सकती है और विद्युत उत्पादन कंपनियों पर निर्भरता कम होगी और प्रदूषण में भी कमी आएगी "सीबीजी का प्रयोग वाहनों में ईंधन के रूप में किया जा सकता है जिससे पेट्रोलियम के लिए विदेशी निर्भरता में भी कमी आएगी" बायोगैस या सीबीजी संयंत्रों से निकले अवशेष को जैविक खाद के रूप में प्रयोग किया जा सकता है जिससे फसलों में केमिकल युक्त खाद से निजात मिलेगी और जैविक खाद वाले फसल से लोगों के स्वास्थ्य पर अच्छा असर पड़ेगा।

इन सभी उपयोगों को सुगम बनाने के लिए भारत सरकार ने हाल ही में एकीकृत पोर्टल "गोबरधन" की शुरुआत की है। गोबरधन पोर्टल भारत में बायोगैस/सीबीजी संयंत्र स्थापित करने की इच्छा रखने वाले सरकारी, सहकारी या निजी संस्था को नामांकन करने का मौका देती है जिसके माध्यम से भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों और विभागों से लाभ लिया जा सकता है। यह पोर्टल विभिन्न मंत्रालयों/विभागों जैसे कि नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (MNRE) की वेस्ट टू एनर्जी योजना, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय (MOPNG) की सतत (सस्टेनेबल अल्टरनेटिव टुवर्ड्स अफोर्डेबल ट्रांसपोर्टेशन) योजना, पशुपालन विभाग और डेयरी (DAHD) की एनिमल हसबेंडरी इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट फण्ड (AHIDF), कृषि, सहकारिता और किसान कल्याण विभाग (DACFW) की अग्रि इंफ्रास्ट्रक्चर फण्ड (AIF), और पेयजल और स्वच्छता विभाग (DDWS) की स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) फेज II जैसी योजनाओं के लिए एक मंच का काम करती है। गोबरधन पोर्टल के माध्यम से सीबीजी/बायोगैस संयंत्रों की स्थापना की प्रक्रिया को सुचारु रूप से चलाने और निजी कंपनियों से अधिक निवेश आकर्षित करने की उम्मीद है।

गोबरधन योजना के परिणामस्वरूप अभी तक लगभग 650 बायोगैस/सीबीजी संयंत्रों की स्थापना देश में हो चुकी है। वित्त वर्ष 2023–24 के केंद्रीय बजट के अनुसार गोवर्धन योजना के तहत 10,000 करोड़ रुपये के कुल निवेश से 500 नये बायो गैस/सीबीजी संयंत्रों की स्थापना की जाएगी "बायोगैस/सीबीजी संयंत्रों के संचालन के लिये मवेशी के गोबर या फसल अवशेषों की नियमित आपूर्ति जरूरी है" नियमित आपूर्ति के लिए किसानों में जागरूकता लाने की जरूरत है कि गोबर या फसल अवशेषों को इन संयंत्रों को बेच करके आय प्राप्त की जा सकती है "इसके लिए सही समय पर अनुदान का मिलना, सुलभ तरीके से ऋण मिलना इत्यादि आवश्यक है।

इस योजना से भारत सरकार के मिशन लाइफ अभियान में भी सहयोग मिलता है। यह पहल कचरे को संसाधनों में बदलने, प्रदूषण में कमी, कच्चे तेल के आयात में कमी, उद्यमिता को बढ़ावा देने और जैविक खेती को बढ़ावा देने में मदद करेगी। यह योजना ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता और आर्थिक विकास को बढ़ावा देती है। इस योजना के माध्यम से जैविक कचरा पर्यावरण की सुरक्षा के साथ–साथ समृद्ध और विकसित भारत के निर्माण में महत्त्वपूर्ण योगदान कर सकता है। इसके साथ ही, यह एक स्वच्छ और ऊर्जावान भारत की ओर हमारा कदम है।

मोनिका प्रियदर्शिनी
प्रबंधक (तकनीकी)
आरईसी निगम मुख्यालय, गुरुग्राम

आरईसी
REC
असीमित ऊर्जा, अनन्त संभावनाएं
Endless energy. Infinite possibilities.

लेख

कोटा – फैक्ट्री

हाल ही में मैंने टीवीएफ की वेब सीरीज कोटा फैक्ट्री देखी। चूंकि मैंने भी आईआईटी जेईई की तैयारी की थी इसलिए मैं वेब सीरीज से बारीकी से कनेक्ट हो पाया। यह वेब सीरीज 2019 में रिलीज हुई थी। असल में यह एक वेब सीरीज ही नहीं है पूरी की पूरी जिंदगी है जो आईआईटी जेईई की तैयारी करने वाले स्टूडेंट जीते हैं और अपना घर बार छोड़कर अपनी–अपनी दुनिया जीतने के लिए कोटा तैयारी करने आ जाते हैं। क्या ही उम्र होती है 12वीं पास करने वाले किसी लड़के की। जब वो अपना सब कुछ छोडकर किसी अंजान शहर में दाखिल होता है। जहां उसके लिए सब कुछ अजनबी होता है। ना दोस्त होते हैं ना अपना शहर ना अपना परिवार। उसे एक सपना दिखाया जाता है। आईआईटी क्लियर करने का। इस सपने के आगे सब कुछ फीका लगने लगता है। लेकिन क्या हर कोई इस जंग में जीत पता है? ज्यादातर हार जाते हैं और वापस लौट जाते हैं। कुछ लौट ही नहीं पाते। वे अपना जीवन ही समाप्त कर लेते हैं। क्या जीवन से बढ़कर भी कुछ होता है? सफल या असफल होना जीवन से बढ़कर नहीं है। यह वेबसीरीज हमें एक स्टूडेंट के जीवन के पल पल के संघर्ष से रूबरू कराती है। इसे देखने के बाद हमारा नजरिया बदल जाता है। इसके डायलॉग हमें याद रह जाते हैं। इस वेबसीरीज में ऐसे बहुत से डायलॉग हैं जो हमारे दिल को छू जाते हैं........मोटिवेट करते हैं... जिंदगी की राह को आसान करते हैं। इन्हीं में कुछ डायलॉग नीचे दिए गए हैं–

1. मां बाप का फैसला शायद गलत हो सकता है पर उनकी नीयत कभी गलत नहीं हो सकती।
2. युद्ध में सोल्जर्स लड़ते है। एक साइड जीतती है एक साइड हरती है। पर वार में हारने वाले वॉरियर्स कहलाते हैं लूजर्स नहीं।
3. तुम्हारी दुनिया में सिर्फ आईआईटी बसता है। सिर्फ आईआईटी। इस उमर में जब–जब किसी चीज को इतनी बुरी तरीके से चाहोगे ना तो दो ही बाते होंगी। अगर मिल गई तो सुकून और अगर नहीं मिली तो मिलेगी जलन, चुभन, पछतावा, गुस्सा, ईर्ष्या और आत्म–संदेह। भाई साहब कॉन्फिडेंस गिर गया है। जितनी दुनिया नहीं मानती, आदमी खुद को उससे भी ज्यादा हारा हुआ मानने लग जाता है।"
4. जब सवाल समझ में न आये तो सवाल को धुना करो।
5. पानी नहीं पिया जा रहा तो पानी पी। मेस में खाना नहीं खाया जा रहा तो बस वही खा! लम्बे समय तक नहीं बैठा जा रहा तो बस बैठ जा। चौलेंज ले की मैं बैठूंगा, उठूंगा ही नहीं!
6. आदमी जिसे देख नहीं सकते उससे नफरत नहीं कर सकते। मेस के खाने की तरफ देखो ही मत। चुप–चाप रोटी उठाओ, जो मिले वो लगाओ और खाओ। कभी कभी मन करेगा नीचे देखने का पर उसी में तुम्हारी हार है।
7. जो रिजेक्ट होने पर उदास ही नहीं है इसका मतलब उन्होंने कभी फाइट ही नहीं की। कभी अपने आप को खुद से ज्यादा पुश ही नहीं किया।
8. 11 प्रतिशत के पीछे भाग के अपनी क्रीज खराब नहीं करनी है। हमें 89% पर फोकस करना है।
9. अपने आस पास के चेहरे याद रखिए। आपका सबसे बड़ा और सबसे गंभीर प्रतियोगी और कोई नहीं आप ही हैं।
10. शॉर्ट ड्यूरेशन के लिए स्ट्रेस अच्छी चीज है।
11. देख..!...तू भीख तो माँग मत। कुछ चाहिए तो मेहनत करके छीन ले।
12. ना थके हैं पर, ना कभी हिम्मत हारी। कुछ कर दिखाने का हौसला जिंदगी में अभी भी जारी है।
13. ये जरूरी नहीं कि हर समस्या का हम समाधान करें।
14. जब आंखों में अरमान लिया। हर मंजिल को अपना मान लिया। तो है आसान क्या मुश्किल क्या जब ठान लिया तो ठान लिया।

मुकेश
प्रबंधक (तकनीकी)
आरईसी क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर

पुस्तक समीक्षा
रघुराम जी. राजन द्वारा लिखित 'आई डू व्हाट आई डू'

प्रकाशक – हार्पर कॉलिन्स इंडिया
शैली – नॉन–फिक्शन/अर्थशास्त्र

पुस्तक के लिए एक वाक्य

लेखक के भाषणों और अनुभवों का एक संक्षिप्त संग्रह जिसका उद्देश्य विभिन्न आर्थिक मुद्दों पर उनके दृष्टिकोण को स्पष्ट करना है, मुख्य रूप से आरबीआई गवर्नर के रूप में उनके कार्यकाल के दौरान।

लेखक के बारे में

रघुराम जी. राजन एक भारतीय अर्थशास्त्री हैं जो वर्तमान में शिकागो विश्वविद्यालय में वित्त के विशिष्ट सेवा प्रोफेसर के रूप में कार्यरत हैं। वह 2013 से 2016 तक भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर थे और इससे पहले 2003 से 2006 तक अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) में मुख्य अर्थशास्त्री के रूप में कार्य किया था। एक अर्थशास्त्री और शिक्षाविद् होने के नाते, राजन ने इस पुस्तक को यथासंभव हद तक पाठकों के लिए गैर–तकनीकी और सरल रखा है। उदाहरण के लिए, उनके डोसानॉमिक्स व्याख्यान ने उच्च वास्तविक ब्याज दरों (मुद्रास्फीति के लिए समायोजित ब्याज दरें) के लाभों को समझाया, भले ही बचतकर्ताओं के लिए पूर्ण ब्याज दरें गिर गईं।

किताब के बारे में

समय से पहले वैश्विक वित्तीय संकट की भविष्यवाणी करने वाले व्यक्ति के रूप में व्यापक रूप से प्रशंसित, श्री राजन ने आरबीआई की कमान तब संभाली जब भारतीय अर्थव्यवस्था उथल–पुथल के दौर का सामना कर रही थी और वह विश्व की कमजोर पांच अर्थव्यवस्थाओं में से एक थी। यह पुस्तक पढ़ने में और भी दिलचस्प हो जाती है क्योंकि भारतीय अर्थव्यवस्था फिर से मुद्रास्फीति, मुद्रा में गिरावट, कम ऋण वृद्धि आदि जैसे समान व्यापक आर्थिक मुद्दों का सामना कर रही है। यह पुस्तक आरबीआई द्वारा उनके कार्यकाल के दौरान लिए गए कई आर्थिक निर्णयों के कैसे और क्यों का जवाब देने का प्रयास करती है।

पुस्तक में दो शब्द बार–बार दोहराए गए हैं – 'मुद्रास्फीति' और 'खराब ऋण'। ये वास्तव में गवर्नर के रूप में उनके कार्यकाल के दौरान सेंट्रल बैंक के लिए प्रमुख फोकस क्षेत्र थे, और पुस्तक में उनके भाषणों में इन मुद्दों के कई संदर्भ हैं। यह पुस्तक खराब ऋणों की समस्या पर आरबीआई के विचारों और खराब और तनावग्रस्त ऋणों के खतरे को दूर करने के लिए मौजूदा ऋण वसूली कानूनों को बदलने के लिए एक विशेष दिवालियापन कानून की आवश्यकता पर भी साझा करती है। रिकॉर्ड के तौर पर, आरबीआई गवर्नर के रूप में उनके कार्यकाल के आखिरी कुछ महीनों के दौरान भारत वास्तव में ऐसा एक कानून लाया था।

जब मैंने इसे पढ़ना शुरू किया तो मुझे उम्मीद थी कि यह पुस्तक तकनीकी शब्दावली से भरी होगी, लेकिन यह कहीं अधिक सरल और स्पष्ट थी, जिससे एक गैर–वित्तीय व्यक्ति के लिए भी पुस्तक से अवधारणाओं और विचारों को समझना आसान हो गया। हालाँकि पुस्तक में कुछ तकनीकी शब्दजाल हैं, लेकिन इसके संदर्भ को समझाते हुए उनमें से अधिकांश को सरल भी बनाया गया है।

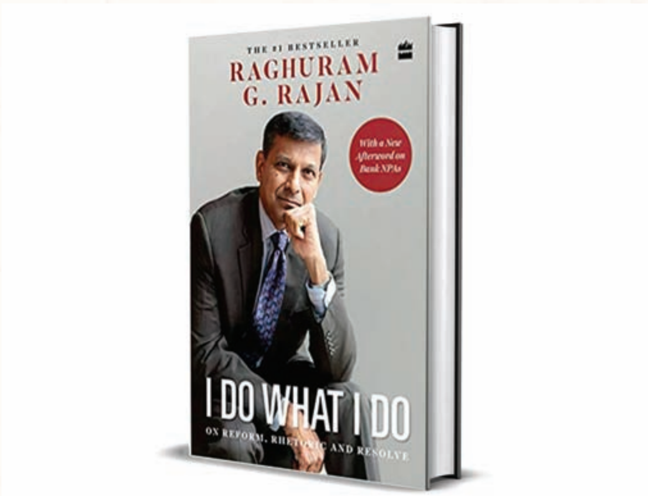

इसके अतिरिक्त, पुस्तक न केवल अर्थशास्त्र के बारे में है, बल्कि इसका उद्देश्य श्री गवर्नर के 'रॉक स्टार' व्यक्तित्व के रूप में पर कुछ प्रकाश डालना भी है। लेखक अपने विचारों को मुखरता से व्यक्त करने के लिए जाने जाते हैं। जैसा कि लेखक ने पुस्तक में साझा किया है, वह अक्सर सार्वजनिक भाषण आमंत्रणों को मना नहीं कर पाते थे और आम तौर पर महीने में एक बार सार्वजनिक भाषण देते थे। हालाँकि, पुस्तक में साझा किए गए अपने एक भाषण में, उन्होंने बार–बार सार्वजनिक वक्ता होने की दुविधा के बारे में बताया है और कैसे उनके शब्दों के चयन से अक्सर विवाद पैदा होता है। जैसा कि उन्होंने साझा किया, उन्होंने एक बार अपने शब्दों को सही ठहराने और बाद के भाषण में तथाकथित विवादास्पद भाषण के अपने इरादे को स्पष्ट करने की कोशिश की, लेकिन उपद्रवियों ने इसकी व्याख्या उस तरह की जिस तरह से यह उनके अनुकूल थी, न कि उस तरह से जिस तरह से यह करने का इरादा था। और इस तरह शीर्षक उभरा होगा, "आई डू व्हाट आई डू (मैं जो करता हूं वह करता हूं)", क्योंकि इसके बाद श्रीमान गवर्नर ने अपने शब्दों और कार्यों के बारे में सार्वजनिक धारणा की परवाह करना बंद कर दिया।

लेखक अपने व्यक्तित्व की एक और महत्वपूर्ण विशेषता यह भी साझा करते हैं कि उन्होंने हमेशा तर्क के विरुद्ध चर्चा में विश्वास किया है। ऐसे युग में जहां सोशल मीडिया ट्रॉल्स व्यापक सार्वजनिक धारणा को तैयार करने में अधिक रुचि रखते हैं, लेखक ऐसे ट्रॉल्स को सिरे से नकारने के बजाय तर्क और तर्क के साथ मुकाबला करने के लिए महत्वपूर्ण सलाह देते हैं। यह आगे की चर्चाओं को तार्किक बनाने का दबाव डालता है, जिसके लिए शोध और प्रयास की आवश्यकता होती है, जो प्रभावी रूप से उन्हें बिना योग्यता के आलोचना करने और बहस करने के लिए हतोत्साहित करता है।

कुल मिलाकर, 342 पृष्ठों में फैली यह पुस्तक अर्थव्यवस्था के लिए मुख्य जोखिम प्रबंधक के रूप में सेंट्रल बैंक की भूमिका को समझने के इच्छुक किसी भी व्यक्ति के लिए पढ़ने योग्य है।

क्या अच्छा था?

जो कोई भी अर्थशास्त्र को अधिक करीब से जानने का इच्छुक है, वह मुद्रास्फीति आदि जैसे महत्वपूर्ण आर्थिक मुद्दों पर दिलचस्प अंतर्दृष्टि के लिए इस पुस्तक को चुन सकता है। पुस्तक का उद्देश्य उपयुक्त उत्तर देना है – मैंने जो किया वह क्यों किया?

क्या अच्छा हो सकता था?

यह पुस्तक उन भाषणों को समाहित करती है जो पहले से ही सार्वजनिक जानकारी में हैं, लेकिन इसमें शामिल मुद्दों पर लेखक के संदर्भ और परिप्रेक्ष्य भी शामिल हैं। लेकिन जैसा कि कहते हैं, "ये दिल मांगे मोर!", पाठक आरबीआई गवर्नर के रूप में अपने कार्यकाल के विस्तार की मांग न करने या कार्यकाल समाप्त होने के बाद विमुद्रीकरण सहित केंद्रीय बैंक द्वारा अन्य कार्रवाइयों के बारे में लेखक के विचारों और अंतर्दृष्टि को जानने के इच्छुक रह गए होंगे। लेकिन फिर भी, यह पूरी तरह से एक व्यक्तिगत पसंद है।

सिमरदीप सिंह
मुख्य प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)
आरईसी निगम मुख्यालय, गुरुग्राम

आरईसी
साल 2008 में
नवरत्न कंपनी बनी।
इसी साल कंपनी
अपना पहला **आईपीओ**
लेकर आई।

आयुर्वेद के अनुसार वर्षा व शरद ऋतुचर्या

आयुर्वेद जीवन जीने का वैज्ञानिक तरीका सिखाता है। दिनचर्या से लेकर ऋतु चर्या सभी से मानव को सेहत ओर ऊर्जा भरा जीवन प्रदान करता है। हमारे शरीर पर खान-पान के अलावा ऋतुओं और जलवायु का भी प्रभाव पड़ता है। एक ऋतु में कोई एक दोष बढ़ता है, तो कोई शांत होता है। इस प्रकार मनुष्य के स्वास्थ्य के साथ ऋतुओं का गहरा सम्बन्ध है। इसलिए आयुर्वेद में हर ऋतु में होने वाले दोषों में वृद्धि, या शांति के अनुसार सब ऋतुओं के लिए अलग–अलग प्रकार के खान–पान और रहन–सहन (आहार–विहार) का उल्लेख किया गया है। इसके अनुसार दिनचर्या पालन करने से, स्वास्थ्य की रक्षा होती है, तथा मनुष्य रोगों से बचा रहता है।

विसर्ग काल की शुरुआत के साथ वर्षा ऋतु शुरू होती है। इस ऋतु में श्रावण से भाद्रपद का काल या जुलाई, अगस्त, और सितम्बर के महीने आते हैं। वर्षा ऋतु में धरती पर पानी पड़ने के कारण जठराग्नि शांत होकर धीरे–धीरे कम हो जाती है। वातावरण में नमी होने का असर स्वास्थ्य पर भी पड़ता है जिससे पाचन शक्ति कमजोर हो जाती है। इस समय वातावरण में बैक्टीरिया बढ़ जाते हैं और हाई बी. पी., फुंसियां, मलेरिया, दस्त, जुकाम, दाद, खुजली, और अन्य कई बीमारियाँ लोगों को होने लगती हैं। इसलिए बारिश के मौसम में ऐसिड और नमक वाला भोजन करने एवं पानी को उबाल कर पीने की सलाह दी जाती है। इस काल में शरीर में वात दोष का प्रकोप होता है, साथ ही कई मौसमी बीमारियाँ फैलने का डर भी रहता है। आयुर्वेद में बताये गए आहार विहार का विशेष रूप से पालन करके सभी अपनी रोग–प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ा सकते हैं।

इस ऋतु में विशेष रूप से भूमि से वाष्प निकलने, आकाश से जल बरसने व जल का अम्ल विपाक होने के कारण, मनुष्य के शरीर में स्थित जठराग्नि (जो पाचन क्रिया का सम्पादन करती है) अत्यंत मंद हो जाती है, तभी वात आदि दोष प्रकुपित हो जाते हैं। इसलिए इस ऋतु में साधारण रूप से सभी नियमो का पालन करना चाहिए, जो त्रिदोश–नाशक हो।

वर्षा ऋतु में सेवन योग्य आहार – इस काल में हमारी जठराग्नि कमजोर होती है, इस कारण हमारा भोजन उष्ण व ताजा होना चाहिए। विशेष रूप से अम्ल व लवण रस सेवन किया जाए, व स्नेह युक्त आहार सेवन करने से वात दोष का शमन होता है। खाने पीने की सभी चीजों में मधु मिलाकर सेवन करना हितकर होता है। अल्प मात्रा में प्रयोग किया हुआ मधु वर्षा ऋतु में उत्पन्न क्लेद का शमन करता है। भोजन में पुराने जौ, गेंहु और चावल का प्रयोग अवश्य करना चाहिए। मूँग की दाल का सेवन भी हितकर है।

वर्षा ऋतु में अयोग्य आहार–विहार– वर्षा ऋतु में पत्ते वाली सब्जियाँ, ठंडे, व रूखे पदार्थ, चना, मोठ, मसूर, आलू, व लघु आहार जैसे जल में बना सत्तू, नदी का जल आदि का सेवन नहीं करना चाहिए। इस समय खट्टे, तले हुए, बेसन से बने पदार्थ, तेज मिर्च मसाले, बासी खाद्य पदार्थ और पित्त बढ़ाने वाले द्रव्यों का सेवन नहीं करना चाहिए।विशेष रूप से इस काल में दिन में ना सोया जाए, ऐसा करना कफ दोष को प्रकुपित कर के अनेक रोगों का कारण बनता है। अत्यधिक व्यायाम, धूप का व बारिश में भीगना भी वर्जित है।

वर्षा ऋतु में विहार – इस ऋतु में शरीर का घर्षण, उबटन, स्नान व गंध का प्रयोग करना चाहिए। सुगंध युक्त पुष्प माला आदि का धारण किया जा सकता है। हल्के रंग के साफ कपड़ों का धारण करना चाहिए। कलेद रहित सूखे स्थान पे रहना चाहिए।

शरद ऋतु चर्या– वर्षा ऋतु के तुरंत बाद आने वाली ऋतु है– शरद। इस ऋतु में सूर्य की किरणों द्वारा पित्त दोष अचानक प्रकुपित हो जाता है। इसी को ध्यान में रख के आहार– विहार का वर्णन आयुर्वेद में बताया गया है। यह ऋतु अगले दो महीने के लिए रहती है। वर्षा ऋतु में संचित पित्त का इस ऋतु में प्रकोप होता है।

शरद ऋतु में योग्य आहार–विहार– इस ऋतु में शरीर का शोधन विरेचन कर्म के द्वारा करना अत्यंत हितकर होता है। विरेचन से शरीर में संचित हुआ पित्त दोष, अन्य दोषों के साथ बाहर निकाला जाता है। रक्त मोक्षण कर्म भी करवा के दूषित रक्त का निष्कासन किया जाना चाहिए।

सभी को चावल, जौ और गेंह का सेवन करना चाहिए। भूख लगने पर रस में मधुर, गुण में लघु, वीर्य में शीतल, कुछ तिक्त रस युक्त, व पित्त को शांत करने वाले द्रव्यों का सेवन करना चाहिए। तिक्त घृत का सेवन करना चाहिए, तिक्त रस (कड़वा) दूषित रक्त की शुद्धि करने में हितकर है।

इस ऋतु में उत्पन्न फूलों की माला, स्वछ वस्त्र, व चंद्रमा की किरणों का सेवन हितकर बताया गया है।

शरद ऋतु में त्याज्य आहार– विहार– इस ऋतु में वसा युक्त भोजन, क्षारीय द्रव्य, दही सेवन, अधिक तेल युक्त भोजन वर्जित है।

धूप का सेवन, दिन में सोना, पूर्वी वायु का सेवन नहीं करना चाहिए। पूर्वी वायु इस काल में नमी लिए होती है इसलिए वर्जित है, इसके सेवन से पुराने संधिवात आदि व्याधियाँ पुनः प्रकुपित हो जाती है।

इसी प्रकार आयुर्वेद में षड ऋतुचर्या होती हैं, जिसमें सभी छह ऋतुओं में किस प्रकार का आहार–विहार का सेवन करना चाहिए, इसका वर्णन किया हुआ है। एक ऋतु के समाप्ति काल व दूसरी के प्रारम्भ काल में किस प्रकार पूर्व ऋतु को छोड़ना व आने वाली ऋतु के नियमों को ग्रहण करना चाहिए। ऋतुचर्या में वर्णित आहार–विहार का सेवन करते हुए यह बात ध्यान देने योग्य है कि ऋतुंधि अर्थात् ऋतु के अन्तिम और आने वाली ऋतु के प्रथम सप्ताह में पहले वाले आहार–विहारों को धीरे–धीरे छोड़ कर ही नई ऋतु के लिए बताये गये आहार–विहार का सेवन आरम्भ करना चाहिए। पहले लिये जाने वाले आहार आदि को एकदम छोड़ कर पूरी तरह नये आहार आदि का सेवन करने से असात्म्य (प्रतिकूलता) की स्थिति बन जाती है। इससे रोग उत्पन्न हो सकते हैं। ऋतुचर्या में वर्णित आहार–विहार का सेवन करते हुए यह बात ध्यान देने योग्य है कि ऋत संधि अर्थात् ऋतु के अन्तिम और आने वाली ऋतु के प्रथम सप्ताह में पहले वाले आहार–विहारों को धीरे–धीरे छोड़ कर ही नई ऋतु के लिए बताये गये आहार–विहार का सेवन आरम्भ करना चाहिए। पहले लिये जाने वाले आहार आदि को एकदम छोड़ कर पूरी तरह नये आहार आदि का सेवन करने से असात्म्य (प्रतिकूलता) की स्थिति बन जाती है। इससे रोग उत्पन्न हो सकते हैं।

ऋतु परिवर्तन के समय पूर्व ऋतु के संचित दोष तथा नई ऋतु के आगमन से हमारी त्रिदोषात्मक मूल प्रकृति तथा बाहर की प्रकृति में भी एक परिवर्तन होता है, अतः इस समय आहार, दिनचर्या व योगाभ्यास पर विशेष ध्यान देना चाहिए। ऐसा करके हम ऋतु परिवर्तन में दोषों के प्रकोप से होने वाले विकारों से मुक्त रहेंगे।

(संकलन एवं सम्पादन)
इरफान राशिद
सहायक प्रबंधक (सीसीपीआर)
आरईसी निगम मुख्यालय, गुरुग्राम

स्काईडाइविंग – एक अद्भुत अनुभव

स्काईडाइविंग करना काफी समय से मेरी बकेट लिस्ट में था और इस साल इसने आकार लिया। जब रोमांच का अनुभव करने की बात आती है तो स्काईडाइविंग से रोमांचक खेल और कोई नहीं। स्काईडाइविंग हमेशा से ही मेरे लिए एक रुचि का विषय रहा है। मैं हमेशा से ही इसे करना चाहता था, पर कभी सोचा नहीं था कि मैं इसे कभी कर पाऊंगा।

खैर इस साल अपनी सालगिरह के अवसर पर मुझे दुबई जाने का मौका मिला। वहां हमने पूरा सप्ताह दुबई के देखने लायक जगह जैसे दुबई फ्रेम, बुर्ज खलीफा, डेजर्ट सफारी, दुबई सिटी टूर आदि देखने और अनुभव करने में बिताया। स्काईडाइविंग जैसे रोमांचक खेल की अनुभूति के लिए मैंने 2 महीने पहले से ही स्काईडाइविंग दुबई, पाम्स में इसकी टिकट ले रखी थी और 9 जनवरी को सुबह 8.00 बजे का स्लॉट बुक कर रखा था। रोचक बात यह है कि इसी दिन यानी 9 जनवरी को ही हमारी पहली सालगिरह भी थी।

रिसेप्शन पर चेक इन

बुकिंग के अनुसार हम सुबह 8.00 बजे के पहले ही स्काईडाइविंग दुबई, पाम्स के रिसेप्शन पर पहुंचे और सारी कागजी कार्रवाई कर ली। यहां मैंने एक स्टैंडर्ड घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर किया जहां साफ अक्षरों में लिखा था कि किसी भी विपरीत परिस्थिति में स्काईडाइवर अपने जीवन के लिए खुद जिम्मेदार होंगे। यहां मैंने स्काईडाइविंग के फोटो और वीडियो के लिए भी पैसे दिए। जैसे ही मैं रिसेप्शन से बाहर आया, मैंने आसमान की तरफ देखा। मौसम बहुत अप्रत्याशित था। बादल छाए हुए थे, ठंडी हवा के साथ बारिश हो रही थी। लेकिन, मैं काफी खुशकिस्मत था कि जब मेरी बारी आई तो मौसम एकदम खुशनुमा हो गया। अब यहां साफ, नीले आसमान और ठंडी हवा के साथ धूप थी। मैंने उस खूबसूरत समय के लिए भगवान का शुक्रिया अदा किया और प्रार्थना की कि यह मेरे स्काईडाइविंग तक नहीं बदलना चाहिए।

विचलित मन

आपकी बारी आने से पहले, आपके पास दुनिया का अंतहीन समय होगा कि आप किसी भी अन्य चीज के बारे में सोचें, जिससे आप अपने दिमाग से स्काईडाइविंग के डर को दूर भगा सकें, पर आप कितना भी प्रयत्न करें स्काईडाइविंग जैसे रोमांचक खेल के बारे में सोच कर डर लगना स्वाभाविक है। रिसेप्शन पर पहुंचकर मैंने याद के तौर पर कुछ फोटो खिंचवाई। कोई फर्क नहीं पड़ता कि आपने स्काईडाइविंग का कौन सा स्लॉट बुक कर रखा है, आपको विविध कारणों (जैसे मौसम की स्थिति, इत्यादि) के कारण कम से कम न्यूनतम एक–दो घंटे अपनी स्काईडाइविंग की बारी आने का इंतजार करना ही पड़ता है। रिसेप्शन पर आप लोगों को एरोप्लेन पर चढ़ते और पैराशूट से उतरते हुए देख पाएंगे, उनके प्रशिक्षक उनकी अंतहीन फोटो लेते हुए नजर आ जाएंगे। अब मैं अपनी बारी के आने का इंतजार करने लगा और जैसे ही मैंने अपना नाम सुना, मैं अपने प्रशिक्षक और फोटोग्राफर का इंतजार करने लगा। मेरे प्रशिक्षक और फोटोग्राफर जल्द ही आ गए और दोनों ने ही मुझे अपना परिचय दिया, प्रशिक्षक का नाम निकल था और वह रोमानिया के थे, फोटोग्राफर का नाम निक था और वह फ्रांस के थे। दोनों ही काफी अनुभवी थे और लंबे समय से पेशेवर स्काईडाइवर रह चुके थे। मैंने भी दोनों को अपना परिचय दिया और बताया कि मुझे सबसे ज्यादा ऊंचाई से डर लगता है और इसी डर को दूर करने के लिए मैं स्काईडाइविंग करना चाहता हूं, निकल ने मुझे आश्वस्त किया और जंपसूट दिया, जो स्काईडाइविंग करने के लिए एक अनिवार्य उपकरण है। जंपसूट थोड़ा ढीला था पर निकल ने उसे बाद में ठीक कर दिया। बाद में, मेरे प्रशिक्षक यानी निकल ने मुझे स्काईडाइविंग के लिए 10 मिनट के निर्देश दिए – बाहों को क्रॉस करना, सिर को पीछे करना, घुटने मोड़ना और कूदना। पहला निर्देश यह है कि कंधे पर एक थपथपाहट मतलब आपके हाथ खोलने का संकेत होता है। दूसरा निर्देश यह है कि जब पैराशूट खुलता है और लैंडिंग के लिए घुटने मुड़े होते हैं तो भुजाओं को छाती के पास लाना होता है।

उड़ने के लिए तैयार

15 मिनट के भीतर, मेरे प्रशिक्षक मुझे हवाई जहाज के बोर्डिंग क्षेत्र में ले गए। उन्होंने मेरा वीडियो इंटरव्यू लिया और कई सवाल पूछे कि क्या मैं नर्वस हूं या क्या यह मेरी पहली स्काईडाइविंग है, इत्यादि। उन्होंने मुझे स्काईडाइविंग करते हुए ऊपर देखने और कैमरे के सामने मुस्कुराने का निर्देश दिए। सच कहूं तो मैं उस समय काफी नर्वस था, पर इस बात के लिए बहुत उत्साहित था कि मैं अपना एक सपना यानी स्काईडाइविंग करने जा रहा हूं। अब मैं पूरी मनोस्थिति से

स्काईडाइविंग करने के लिए तैयार हो गया था और प्रशिक्षक के निर्देशानुसार बाकी स्काईडाइवर्स के साथ विमान के अंदर बैठ गया। अब तक मुझे समझ आ गया था कि यहां से पीछे नहीं मुड़ा जा सकता है और मुझे स्काईडाइविंग यानी अपना सपना पूरा करना ही है। विमान के अंदर कुल मिलाकर हम 18 लोग थे जो 3–3 के समूह में विभाजित थे जिसमें प्रत्येक स्काईडाइवर के साथ एक फोटोग्राफर और एक प्रशिक्षक शामिल था। जब विमान तकरीबन 10000 फीट की ऊंचाई पर था तब मेरा दिल तेजी से धड़कने लगा और मैं थोड़ा घबरा गया था। अपने डर को दूर करने के लिए मैं खिड़की से बाहर देखने लगा और मुस्कुराने की कोशिश करने लगा। पर सच कहूं तो 10000 फीट की ऊंचाई से दुबई पाम्स और भी सुंदर दिखाई दे रहा था। विमान की यात्रा करीब 20 मिनट तक चली। जैसे ही विमान 14000 फीट की ऊंचाई पर पहुंचा, तभी मेरे प्रशिक्षक यानी निकल ने मुझे दरवाजे की ओर चलने का इशारा किया। जैसे ही मैंने अपने साथी स्काईडाइवर को विमान से स्काईडाइविंग करते हुए देखा तो सच कहूं तो यह मेरे लिए बहुत ही बेचैन कर देने वाला दृश्य था। यह मेरे लिए पहला अनुभव था जहां मैं खुले आसमान में विमान के अंदर था और दरवाजा खुला हुआ था। मेरी बारी आने पर जब मैं दरवाजे के किनारे पर पहुंचा तो नीचे के विशाल दृश्य को देखकर मन मोहित हो गया था, अब मैं पूरी तरह से छलांग मारने के लिए तैयार था। जैसे ही मैंने छलांग लगाई और नीचे के खूबसूरत नजारे को देखा तब कुछ समय के लिए मेरा मन विचलित होने लगा पर मैंने स्काईडाइविंग कर ली है, इस बात के एहसास से ही मन में एक अलग प्रकार का सुकून महसूस होने लगा। उस पल मैं अपने चेहरे पर बहुत तेज गति से आती ठंडी हवा महसूस कर सकता था, मानो वह मेरा स्वागत कर रही हो। हालाँकि, मुझे अपने दिशा–निर्देश याद थे, पर यह अत्यंत स्वाभाविक है कि स्काईडाइविंग के तनाव में आप कुछ दिशा–निर्देश भूल जाते हैं, पर आपके प्रशिक्षक इतने अनुभवी होते हैं कि वह आपको ऐसी कोई भी भूल महसूस नहीं होने देते।

साठ सेकंड का फ्री फॉल

आप इतनी तेज गति से जमीन की ओर छलांग मारते हैं की तेज हवा के कारण आपको सब धुंधला दिखाई देता है। कुछ समय के बाद हम जब स्थिर हुए तो नीचे दुबई पाम्स का नजारा सचमुच अविश्वसनीय और खूबसूरत था। फ्री फॉल के समय मुझे महसूस हो रहा था मानो मैं उड़ रहा हूं। निर्देशानुसार मुझे अपने प्रशिक्षक का हाथ पकड़ना था, पर तेज हवा की गति के कारण मैं उनका हाथ पकड़ नहीं पा रहा था। फ्री फॉल के समय निक यानी हमारा फोटोग्राफर हमारे क्लोज अप शॉट्स ले रहा था, जो आगे चलकर मेरे लिए आजीवन एक अनमोल याद बनकर रहेगा। सच कहूं तो स्काईडाइविंग डर के साथ एक दिलचस्प टकराव है।

लैंडिंग

60 सेकंड की फ्री फॉल के बाद मेरे प्रशिक्षक निकल ने पैराशूट खोल दिया और हम ड्रॉप जोन की ओर बढ़े। कुछ समय के बाद निकल ने मेरा चश्मा ढीला किया और पूछा कि क्या मैं ठीक हूं? स्काईडाइविंग एक अद्भुत अनुभव था। मेरे प्रशिक्षक निकल ने मुझसे पूछा कि क्या मैं पैराशूट पर स्पिन करना चाहता हूं, मैंने कहा बिल्कुल हां। फिर हमने पैराशूट पर कुछ स्पिन करतब किए और ड्रॉप जोन की ओर आगे बढ़ गए। पैराशूट खुलने से लेकर ड्राप जोन तक पहुंचने का समय तकरीबन 10 मिनट था। हमारी लैंडिंग काफी आसानी से हो गई। मैं यह अनुभव शब्दों में बयां नहीं कर सकता कि यह मेरे लिए कितना अद्भुत और खूबसूरत अनुभव था। नीचे उतर कर मैंने अपने प्रशिक्षक निकल और फोटोग्राफर निक को गले लगाकर उनका धन्यवाद किया।

लैंडिंग के बाड़ मैंने जंपसूट उतार दिया और निकल को वापस कर दिया। मेरा मानना है कि मेरी पहली स्काईडाइविंग ने मुझे मेरे अस्तित्व के और करीब ला दिया है और दुनिया के बारे में मेरा नजरिया बदल दिया है। जब मैं सोचता था कि 14000 फीट की ऊंचाई से स्काईडाइविंग करना कितना जोखिम और भयावह हो सकता है, पर अब स्काईडाइविंग करने के बाद मैं यह बात निश्चित रूप से कह सकता हूं कि स्काईडाइविंग का सबसे ज्यादा भयावह और जोखिम का क्षण अब मेरे लिए आजीवन एक खुशनुमा एहसास बनकर रह गया है। मेरा यह हमेशा से मानना रहा है कि हर किसी को कभी न कभी कुछ ऐसा करना चाहिए जिससे उन्हें डर लगे। यदि आपने कभी भी स्काईडाइविंग का अनुभव नहीं लिया है तो मैं आपको कहूँगा कि आप भी अपने जीवन में एक बार यह अनुभव जरूर लें, यह आपके जीवन को बदल देने वाला अनुभव होगा, जिसे आप आजीवन याद रखेंगे।

"भगवान ने जीवन में सबसे अच्छी चीजों को भय के दूसरी तरफ रखा है"
"अद्भुत अनुभव ही असली खुशी है"

खूबसूरत दुबई पाम्स

तुषार गनेर
उप प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)
आरईसी निगम मुख्यालय, गुरुग्राम

आरईसी लिमिटेडः विद्युत क्षेत्र में गौरव और प्रतिष्ठा की गाथा

1969 में लगातार तीन साल तक मॉनसून की कमी के कारण भारत कृषि संकट से जूझ रहा था। कृषि क्षेत्र और अपने नागरिकों के जीवन की गुणवत्ता को बढ़ावा देने के लिए देश के ग्रामीण और अर्ध–शहरी क्षेत्रों में बिजली की आपूर्ति में सुधार लाने की तत्काल जरूरत थी। गंभीर सूखे के समय आवश्यक सिंचाई व्यवस्था को बनाए रखने के लिए सरकार ने कृषि पंप–सेटों को बिजली प्रदान करके मॉनसून पर कृषि की निर्भरता को कम करने का प्रयास किया। इस तरह आरईसी लिमिटेड अस्तित्व में आया। आरईसी का उद्देश्य कृषि पंप–सेटों को वित्तीय सहायता देकर उस समय देश की जरूरतों को पूरा करना था।

इसके बाद, आरईसी नए–नए क्षेत्रों में प्रवेश करती गई और आज यह बिजली उत्पादन, पारेषण, वितरण और नवीकरणीय ऊर्जा सभी क्षेत्रों को वित्तीय सहायता प्रदान करने वाली अग्रणी कंपनी के रूप में उभर कर सामने आई है तथा अपने कार्य क्षेत्र का निरंतर विस्तार किया है। राष्ट्र की सेवा के 53 वर्षों के अपने शानदार सफर के साथ आरईसी आज भारत के प्रमुख वित्तीय संस्थानों में से एक बन गई है जिसकी ऊर्जा क्षेत्र को आगे ले जाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है।

आरईसी ने 2008 में अपने शेयरों का इनीशियल पब्लिक ऑफर (आईपीओ) जारी किया था, और यह आईपीओ उस समय 27 गुना ओवर सब्सक्राइब हुआ जो एक उल्लेखनीय सफलता थी। इसी वर्ष आरईसी को "नवरत्न" का दर्जा भी मिल गया। 2017 में आरईसी सौर, पवन, बायोमास और पनबिजली क्षेत्र में हरित ऊर्जा परियोजनाओं के वित्तपोषण के लिए अमेरिकी डॉलर में ग्रीन बॉण्ड लॉन्च करने वाला पहला भारतीय सार्वजनिक उपक्रम बन गया। कंपनी के पोर्टफोलियो में लगातार वृद्धि हुई है और रिकॉर्ड तोड़ प्रदर्शन के साथ कंपनी ने नए–नए मुकाम हासिल किए हैं। वित्तीय वर्ष 2022 में आरईसी को ₹10,046 करोड़ का नेट एनुअल प्रॉफिट हुआ जो आरईसी के इतिहास में सर्वाधिक अधिक है। वित्तीय वर्ष 2023 की पहली तिमाही के दौरान आरईसी को ₹2,447 करोड़ का नेट प्रॉफिट हुआ, और इसकी लोन बुक बढ़कर ₹3.87 लाख करोड़ तक पहुँच गई और इस तरह आरईसी की नेट वर्थ ₹52,000 करोड़ से अधिक हो गई है। (30 जून, 2022 तक) बेहतर एसेट क्वालिटी के साथ ही लोन बुक और नेट वर्थ कई गुना अधिक हो गया है। यह कंपनी के ठोस बुनियादी सिद्धांतों को दर्शाता है। आरईसी ने वित्तीय रूप से स्थिर और सुदृढ़ कारोबारिक संगठन होने के नाते शेयरधारकों को निरंतर लाभांश का भुगतान किया है और अपने निवेशकों और हितधारकों की आर्थिक स्थिति को मजबूत किया है।

आरईसी ने पिछले कुछ वर्षों के दौरान खुद को विद्युत क्षेत्र के वित्तीय आधार स्तम्भ के रूप में स्थापित किया है और इसे इस बात का गौरव प्राप्त है कि इसने वित्तीय ऋण सहायता द्वारा देश के पारेषण और वितरण नेटवर्क के बड़े हिस्से को सहयोग किया है, जिसमें 7 लाख एमवीए से अधिक ट्रांसफॉर्मेशन क्षमता का वित्तपोषण शामिल है। जहां तक उत्पादन की बात है, कंपनी ने 85,000 मेगावाट से अधिक की राज्य क्षेत्र की पारंपरिक ऊर्जा क्षमता का भी वित्तपोषण किया है।

आरईसी की सरकार की प्रमुख भागीदार कंपनी होने की परंपरा बरकरार है और इसे प्रधानमंत्री सहज बिजली हर घर योजना (सौभाग्य) और दीन दयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना (डीडीयूजीजेवाई) जैसी कई सरकारी योजनाओं में नोडल एजेंसी के रूप में नियुक्त किया गया है। 2015 में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर देश के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने लाल किले की प्राचीर से घोषणा की थी कि देश के सभी गैर–विद्युतीकृत गांवों को 1,000 दिनों के भीतर विद्युतीकृत किया जाएगा। 28 अप्रैल 2018 को मणिपुर के लेसांग में बिजली का बुनियादी ढांचा पहुंचने के साथ ही यह देश का अंतिम विद्युतीकृत गांव बन गया, और इसके साथ ही सर्वत्र ग्रामीण विद्युतीकरण का लक्ष्य प्राप्त कर लिया गया। माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा निर्धारित इस महत्वाकांक्षी लक्ष्य को 13 दिन पहले ही सिर्फ 987 दिनों में हासिल कर लिया गया, जिसे अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी ने "ऊर्जा क्षेत्र के इतिहास में सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक" के रूप में मान्यता प्रदान की।

डीडीयूजीजेवाई के अंतर्गत बिजली के बुनियादी ढांचे में वृद्धि करते हुए सरकार ने देश के सभी गैर–विद्युतीकृत घरों को बिजली कनेक्शन

देने के उद्देश्य से सौभाग्य स्कीम का शुभारंभ किया। इस स्कीम के अंतर्गत पूरे देश में तीन करोड़ से अधिक इच्छुक परिवारों तक बिजली पहुंचाई गई। इसके परिणामस्वरूप देश ने आज सर्वत्र घरेलू विद्युतीकरण का लक्ष्य हासिल कर लिया है, जिससे लाखों नागरिकों को बिजली मिली है और इनके जीवन में एक नई आशा का संचार हुआ है। साथ ही, उन्हें कई नई अवसर भी प्राप्त हुए हैं। इस उपलब्धि के प्राप्त होने के बाद भारत विद्युत अधिशेष वाला राष्ट्र बन गया है।

सरकार ने हाल ही में एक सुधार–आधारित और परिणाम से जुड़ी संशोधित वितरण क्षेत्र योजना (आरडीएसएस) शुरू की है और इसके कार्यान्वयन की सुविधा के लिए आरईसी को नोडल एजेंसी के रूप में नामित किया है। आरडीएसएस में एक मजबूत, भरोसेमंद और सुगम विद्युत क्षेत्र के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए बिजली वितरण कंपनियों का सहयोग करने और इनकी वित्तीय स्थिति को बेहतर बनाने का प्रावधान किया गया है।

सामाजिक रूप से जिम्मेदार कंपनी होने के कारण, आरईसी द्वारा आर्थिक, पर्यावरणीय और सामाजिक आवश्यकताओं में संतुलन स्थापित करने का भी प्रयास किया जाता है। समावेशी सामाजिक विकास की सुविधा के लिए आरईसी ने स्वच्छता, स्वास्थ्य देखभाल,

कौशल विकास, महिला सशक्तिकरण, पर्यावरणीय स्थिरता और ग्रामीण बुनियादी ढांचे के क्षेत्र में कई सीएसआर पहलों की शुरुआत है। अपनी सीएसआर पहलों के माध्यम से आरईसी के द्वारा 'स्थिरता के साथ सामाजिक कल्याण' के मार्गदर्शी सिद्धांत के साथ कई प्रोजेक्ट क्रियान्वित किए जा रहे हैं।

आरईसी लिमिटेड की सीएसआर इकाई – आरईसी फाउंडेशन की स्थापना राष्ट्रीय विकास के लिए महत्वपूर्ण विषयों पर काम करने और आर्थिक रूप से पिछड़े और वंचित वर्गों के सशक्तीकरण के उद्देश्य से समाज के विभिन्न क्षेत्रों के लाभार्थियों तक पहुंचने की दृष्टि के साथ की गई थी। कंपनी ने अपने सीएसआर विंग के माध्यम से देश भर में 39,400 से अधिक युवाओं को रोजगारोन्मुखी कौशल विकास प्रशिक्षण प्रदान करने वाले कार्यक्रमों के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की है। स्वच्छ और हरित राष्ट्र बनाने के संगठनात्मक लक्ष्य के अनुरूप आरईसी ने आईआईटी मद्रास, आईआईएम तिरुचिरापल्ली जैसे शीर्ष संस्थानों के कैंपस और राष्ट्रपति भवन के राष्ट्रपति एस्टेट्स परिसर में सोलर पैनल लगाए हैं।

अपने निरंतर प्रचालन और कारोबारिक उत्कृष्टता के कारण आरईसी को हाल ही में 'महारत्न' का दर्जा दिया गया है, जो किसी केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम (सीपीएसई) को दी जाने वाली सर्वोच्च मान्यता है। कंपनी अब नए क्षेत्रों में नए अवसरों का संधान कर रही है और इलेक्ट्रिक वाहन, सोलर–विंड हाइब्रिड पावर प्रोजेक्ट, सोलर पीवी सेल और मॉड्यूल निर्माण यूनिट्स जैसी नई पहलों में सहयोग दे रही है। आरईसी नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं के वित्तपोषण के जरिए ऊर्जा क्षेत्र में बदलाव को भी बढ़ावा दे रही है और इसके द्वारा 13,000 मेगावाट क्षमता की हरित ऊर्जा का वित्तपोषण पहले ही किया जा चुका है। हाल ही में आरईसी महानगरों और हवाई अड्डों के बुनियादी ढांचा विकास संबंधी परियोजनाओं को वित्तीय सहायता देने के क्षेत्र में भी आगे बढ़ी है।

आरईसी की सहज शुरुआत ने कॉर्पोरेट जगत में इसकी प्रगति को आगे बढ़ाया है और राष्ट्र निर्माण ही कॉर्पोरेशन की प्रतिबद्धता वाला सर्वप्रमुख मूल्य है। आज का समय भारत में विद्युत क्षेत्र के लिए बेहद अहम है क्योंकि यह क्षेत्र तकनीकी प्रगति और विविध ऊर्जा परिदृश्य के आधार पर तीव्र बदलाव के दौर से गुजर रहा है। भारत 2025 तक 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है और देश को दुनिया की एक प्रमुख आर्थिक शक्ति बनाने में सहयोग करने के लिए देश की 'उज्ज्वल' पीढ़ी का मार्ग प्रशस्त करते हुए आरईसी पूरी तरह से तैयार है। प्रगति के पथ पर अग्रसर आरईसी राष्ट्र–निर्माण में प्रमुख भागीदार बनने के लिए पूरी तरह से तत्पर और संकल्पित है।

सीसीपीआर टीम,
आरईसी निगम मुख्यालय, गुरुग्राम

REC का सफरनामा

साल **2017** में **आरईसी लंदन स्टॉक एक्सचेंज** में सूचीबद्ध हुई और इसने **यूएसडी ग्रीन बॉन्ड** जारी किए, आरईसी ऐसा करने वाली **पहली भारतीय पीएसयू** कंपनी बनी।

महिलाओं की स्थिति: कल्पना और हकीकत

धरती के इस छोर से उस छोर तक
मुट्ठी भर सवाल लिये मैं
छोड़ती–हाँफती–भागती
तलाश रही हूँ सदियों से निरंतर
अपनी जमीन, अपना घर
अपने होने का अर्थ!

यूँ तो स्त्री और पुरुष की शारीरिक क्षमताएँ नैसर्गिक रूप से ही असमान हैं। परन्तु भारतीय समाज के पुरुष प्रधान होने के कारण स्त्री और पुरुषों के बीच अवसरों की असमानता भी आ गई है। समाज में उत्पादन और आर्थिक संसाधनों पर जिसका वर्चस्व होता है, निर्णय लेने की शक्ति भी उसी की होती है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि पूंजी के साथ सत्ता स्वतः ही आ जाती है। कहने का अभिप्राय यही है कि पुरुष प्रधान होने के कारण भारतीय समाज में शक्ति हमेशा से पुरुषों के हाथ में ही रही है। इसका एक बड़ा कारण है स्त्रियों के पास सामाजिक और आर्थिक आत्मनिर्भरता के अवसरों का अभाव। यह अभाव इतिहास में कई वर्षों तक बना रहा और धीरे–धीरे संस्थाबद्ध होता गया। स्त्रियाँ अपनी दुर्दशा का कारण अपने भाग्य और नियति को मानती रहीं और अपने अधिकारों से सदा वंचित रहीं। परंतु अब धीरे–धीरे शिक्षा के प्रचार–प्रसार से स्त्रियों को यह समझ में आने लगा है कि उनकी विवशता का मूल कारण समाज में पुरुषों के वर्चस्व वाली सामाजिक व्यवस्था ही है। स्त्रियों को पुरुषों की तुलना में शिक्षा के कम अवसर मिले जिसने ऐसी सामाजिक व्यवस्था को जन्म दिया। अशिक्षा के कारण ही स्त्रियाँ आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नहीं हो पाईं। हालांकि ग्रामीण क्षेत्रों के मुकाबले शहरों में स्थिति थोड़ा बेहतर पर वहाँ भी स्त्रियों का शोषण किसी अन्य रूप में होता आया है। भारत के ग्रामीण इलाकों में लोग आज भी अपने घर की लड़कियों को घर से दूर किसी स्कूल या कॉलेज में नहीं भेजना चाहते हैं। अकेले घर से बाहर नहीं निकलने देते हैं और कम उम्र में ही उनकी शादी कर देते हैं। इन बातों का क्या कारण हो सकता है? किसी लड़के के साथ तो यह नहीं होता है। क्या पुरुष प्रधान समाज में किसी परिवार की लड़की का अस्तित्व उस परिवार की सामाजिक इज्जत और मर्यादा के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। पुरुषों के लिए महिलाएं सिर्फ घर के अंदर की शोभा बनकर रह जाती हैं, जिनकी जगह विवाह के बाद रसोई तक सिमट जाती है। एक स्त्री की क्षमता को वर्षों से कम करके आँका गया और मध्यकाल के बहुत बाद तक पुरुष प्रधान समाज ने स्त्री को भोग–विलास की वस्तु के रूप में विशेष दृष्टि से ही देखा।

स्त्रियों को अपनी जिंदगी में कदम–कदम पर कितनी विवशताओं का सामना करना पड़ता है यह सिर्फ एक स्त्री ही समझ सकती है। स्त्री पैदा नहीं होती है, बनाई जाती है। इतिहास के अलग–अलग दौर में, धर्म, सभ्यता, संस्कृति और मर्यादा के नाम पर स्त्रियाँ की जिस एक चीज को उनसे छीना गया, वह थी उनकी आजादी। आजादी अपने चुनाव की, अपने शरीर की। अपनी संतान के लिए, अपने प्रियजनों के लिए उसे अपने पति पर आश्रित रहना पड़ा। भारतीय साहित्यकार महादेवी वर्मा ने अपने निबंध **'स्त्री के अर्थ स्वातंत्र्य का प्रश्न'** में लिखा है– "आर्थिक स्तर पर भारतीय स्त्री सदा से ही परतंत्र रही है। यही कारण है कि छोटी छोटी चीजों के लिए स्त्री को विवाह से पूर्व तो अपने परिवार पर और विवाह के पश्चात अपने पति पर निर्भर रहना पड़ता है। वह अपनी मांगों को खुलकर कभी व्यक्त नहीं कर पाती।

आज स्त्रियों की सामाजिक स्थिति पहले से बेहतर हुई है। पर क्या यह बेहतरी जिस अनुपात में होनी चाहिए थी, उस अनुपात में हो पाई है? क्यों स्त्रियों को आज भी आजाद भारत में घरेलू हिंसा और गैर–बराबरी का सामना करना पड़ रहा है। इन समस्याओं का सामना एक स्त्री रोज करती है। पुरुष जीवन के हर क्षेत्र में महिलाओं पर अपना पौरुष दिखाते रहते हैं। आज के अखबार ऐसी घटनाओं से भरे पड़े हैं। क्या दफ्तर और क्या घर? एक स्त्री के जीवन का हर कोना पुरुषों की वर्चस्ववादी सोच का शिकार है। क्यों हर बार एक स्त्री को उसके स्त्री होने का एहसास कराया जाता है? छोटी–छोटी बातों पर उसे बहुत कुछ सुनना पड़ता है। क्या विवाह एक स्त्री को सम्पूर्ण सुख दे पाता है? अपना घर छोड़ने के बाद वह जिस घर को अपनाना चाहती है क्या वह घर उसे उसके पूरे औरतपन के साथ स्वीकार कर पाता है?

अगर समाज ने स्त्री को शुरू से ही पुरुषों के समान शिक्षा के अवसर दिए होते तो आज की स्त्री आर्थिक रूप से स्वतंत्र होती और उसे दैनिक विवशताओं का सामना नहीं करना पड़ता। किसी भी समाज को सभ्य तभी

समझा जा सकता है जब उस समाज की महिलाओं की स्थिति पुरुषों के समान हो और उसे पुरुषों के समान अवसर प्रदान किए जाएं।

समय के साथ–साथ महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन तो आया है पर यह परिवर्तन नाकाफी है। जब तक पुरुष स्त्री को उसकी पूरी आजादी के साथ स्वीकार करने का साहस नहीं कर पाएगा तब तक स्त्रियों को उनका पूरा अधिकार नहीं मिल सकता है।

दोष पुरुषों की दृष्टि में होती है, किसी स्त्री के संस्कारों में नहीं। अगर सभ्य बनना है तो वो पुरुष को बनना है, स्त्री को नहीं। तभी स्त्री और पुरुष जीवन में साथ–साथ समभाव होकर चल पाएंगे। पुरुषों को आज के बदलते परिवेश में स्त्रियों की आजाद मानसिकता को स्वीकार करना ही होगा क्योंकि आज की नारी अबला से सबला बन चुकी है। वह शारीरिक और मानसिक दोनों ही स्तर पर पहले से मजबूत हुई है। हमारा देश तो कब का आजाद हो गया था पर स्त्रियों की एक बहुत बड़ी आबादी आज भी पुरुषों की सोच और वर्चस्ववादी मानसिकता की गुलाम है। इस गुलामी के खत्म होने पर ही भारत विश्व में अपने प्राचीन गौरव को फिर से प्राप्त कर पाएगा। किसी कवि ने सही ही लिखा है–

'नारी का सम्मान करो
मत इसका अपमान करो
वह जब जिद पर आती है
एक तूफान उठाती है
वह काली (दुर्गा) बन जाती है।'

अमूमन यह देखा गया है कि जिस घर में नारी का अपमान होता है वह घर रहने लायक नहीं रह जाता है, उसका वैभव नष्ट हो जाता है। हमारे धर्म–शास्त्रों में कहा गया है–

या देवी सर्वभूतेषु, नारी रुपेण संस्थिता
नमस्तस्ये नमस्तस्ये नमस्तस्ये नमो नमरू॥

इशिता प्रिया भारती
प्रशिक्षु (राजभाषा विभाग)
आरईसी निगम मुख्यालय, गुरुग्राम

आरईसी– ऊर्जा क्षेत्र का सूरज

गौरवान्वित कर दे,
ऐसा कुछ इतिहास है।
आरईसी बस कुछ शब्द नहीं।
ये तो ऊर्जा क्षेत्र का वह सूरज है,
जिसका हर ओर फैला प्रकाश है ।।

इससे जुड़ कर कई,
परियोजनाओ को अर्थ है मिला,
जिससे उन्होंने रोशन ना जाने कितने घरों को है किया,
आज इससे जेनको, ट्रांसको, ओर डिस्कॉम पाते पूंजी रूपी आधार हैं।।
सरकारी परियोजनाओं जैसे सौभाग्य, डीडीयूजीजेवाई,
और आरडीएसएस में निभाता अपनी अहम भूमिका।
ओर करता कुछ खास है,
तभी तो सरकार को भी इस पर विश्वास है।।
गौरवान्वित कर दे,
ऐसा कुछ इतिहास है।
आरईसी बस कुछ शब्द नहीं,
ये तो ऊर्जा क्षेत्र का वह सूरज है।
जिसका हर ओर फैला प्रकाश है ।।

विश्वास हितधारकों का इसका पर्यायवाची एहसास है,
मेक इन इंडिया और प्रगतिशील भारत की बात को भी।
हमने कुछ ऐसे समझा और जाना है,
तभी तो नवीकरणीय ऊर्जा, जल विद्युत ऊर्जा और
सौर ऊर्जा की विशेषता को हमने माना है,
थर्मल से इन ऊर्जा स्त्रोत पर धीरे धीरे बढ़ते जाना।
ये हमारा भी प्रयास है।।
जिससे कॉर्बन फुटप्रिंट्स कम करने में अपना सहयोग हम दे पाए,
ओर प्रगतिशील भारत के विकास में अहम भूमिका निभाए।
ओर करके ऐसा ये बात हम सच कर दिखाए,
की गौरवान्वित कर दे।
ऐसा कुछ इतिहास है।।
आरईसी बस कुछ शब्द नहीं।
ये तो ऊर्जा क्षेत्र का वह सूरज है,
जिसका हर ओर फैला प्रकाश है ।।

सामाजिक, पर्यावरण, एवं गवर्नेंस के मूल्य भी हमारे लिए खास हैं।
अपनी प्रगति के साथ–साथ,
सभी आधारभूत मूल्यों का भी रखते हम ध्यान हैं।
तभी तो आज कॉरपोरेट सामाजिक दायित्व भी,
निभाते नजर हम आते हैं।
मजबूरी नहीं समाज के प्रति जिम्मेदारी समझ इसे हम निभाते हैं,
ना जाने ऐसी कितनी जिम्मेदारियां हमने हैं निभाई।
तभी तो सरकारी उपक्रम के रूप में,
महारत्न की उपाधि है पाई।
तभी तो,
गौरवान्वित कर दे।
ऐसा कुछ इतिहास है।।
आरईसी बस कुछ शब्द नहीं,
ये तो ऊर्जा क्षेत्र का वह सूरज है।
जिसका हर ओर फैला प्रकाश है ।।

जो पाई हमने महारत्न की उपाधि,
तो कुछ खास विशेषताएं भी शामिल करने की खूबी है पाई।
जिससे हमने इंफ्रा एवं लॉजिस्टिक्स सेक्टर तक अपनी पहुंच है बनाई,
और आज जो शुरुवात हुई वो एक नए दौर का मानो आगाज है।
जल्दी ही इस दौर का भी आरईसी,
उगता हुआ सूरज जाना जाएगा।
जिससे विकास के नए आयाम को हम पाएंग,
करके ऐसा ये बात सार्थक कर हम दिखलाएंगे।
गौरवान्वित कर दे।।

ऐसा कुछ इतिहास है।
सिर्फ आज का नहीं।
आने वाले समय का।
गौरव है आरईसी।
और आरईसी बस कुछ शब्द नहीं,
ये तो ऊर्जा क्षेत्र का और इंफ्रा क्षेत्र का वह सूरज है।
जिसका हर ओर फैला प्रकाश है ।।

निर्भय गोयल
सहायक प्रबंधक (सी.एस.)
आरईसी निगम मुख्यालय, गुरुग्राम

शिलांग का मावलिनॉन्ग गाँवः स्वच्छता का आदर्श

दुनिया के लगभग सभी विकासशील देशों की जनसंख्या वहां के क्षेत्रफल के अनुपात में ज्यादा है और अधिक जनसंख्या के दुष्प्रभाव को किसी भी देश के रहन–सहन, वहां की संस्कृति और वहां के परिवेश में देखा जा सकता है। ऐसे देशों में स्वच्छता एक बड़ा मुद्दा होता है।

2014 में जब देश के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 'स्वच्छ भारत अभियान' की शुरुआत की थी तब से लेकर आज तक हमारे देश में स्वच्छता को लेकर शुरू हुई बहस को काफी विस्तार मिला है और निश्चित रूप से देश के नागरिकों को अपने आस–पास के परिवेश को साफ रखने की बहुत बड़ी प्रेरणा मिली है। कोशिशें जारी हैं और परिणाम दिख रहे हैं। स्वच्छ भारत अभियान कितना सफल है या कितना असफल, इसका मूल्यांकन भी चल रहा है। लेकिन इतना तो तय है कि यह अभियान हमें हमेशा यह याद दिलाता है कि हमें अपने देश को साफ रखना है और दुनिया के अन्य विकसित देशों के समकक्ष बनाना है। स्वच्छता की एक ऐसी संस्कृति का विकास करना है जिससे हमारी आने वाली पीढ़ियों को इन अस्वच्छता से होने वाली समस्याओं से जूझना नहीं पड़े।

हाल ही में मुझे शिलांग जाने का मौका मिला। शिलांग आने से पहले हमने एशिया के सबसे स्वच्छ गांव मावलिनॉन्ग गांव के बारे में सुना था जो शिलांग से लगभग 80 किलोमीटर दूर पूर्वी खासी हिल्स जिले में बसा हुआ है। इस जगह को देखने की इच्छा मेरे मन में बहुत दिनों से थी। हमने अपने व्यस्त कार्यक्रम में से थोड़ा समय निकाला और हम लोग मावलिनॉन्ग गांव को देखने गए। शिलांग से इस गांव तक का रास्ता बेहद खूबसूरत था। शिलांग को वैसे भी 'स्कॉटलैंड ऑफ दि ईस्ट' कहा जाता है। हम लोगों ने इस गांव में दो 4 घंटे गुजारे। यदि यहां की साफ सफाई वाली संस्कृति हमारे देश के अन्य राज्यों के शहरों और गांवों में भी अपना लिया जाए तो हमारे देश की स्वच्छता

और स्वास्थ्य की समस्या को दूर किया जा सकता है। गांव बहुत प्लांड तरीके से विकसित किया गया है। यहाँ जितना साफ लोगों का अपना घर था उतनी ही साफ यहां की गलियां और रास्ते भी थे। सड़क पर हमें कोई भी प्लास्टिक या कचरा नहीं दिखा। ऐसा भी नहीं था कि यहां पर लोग दिन भर सफाई ही करते रहते हैं। स्वच्छता यहां के लोगों की संस्कृति में रच–बस चुकी है और इस गांव की साफ–सफाई कोई सरकारी संस्था नहीं बल्कि यहां रहने वाले लोग खुद ही करते हैं। लगभग 600 लोगों की जनसंख्या वाले इस छोटे से गांव में 100 से अधिक खासी जनजातीय परिवार रहते हैं और यहाँ पॉलीथीन के उपयोग पर पूरी तरह से प्रतिबंध है।

मावलिननॉन्ग गाँव में स्वच्छता की इस संस्कृति की शुरुआत लगभग 130 साल पहले शुरू हुई थी जब इस गांव में हैजे की बीमारी का आतंक छा गया था। किसी भी तरह की मेडिकल सुविधा न होने की वजह से इस बीमारी से छुटकारा पाने के लिए सफाई ही एकमात्र तरीका था। हमें यहां के लोगों ने बताया कि क्रिश्चियन मिशनरियों ने यह बात दूर–दूर तक फैला दी कि साफ–सफाई से ही हैजे से बचा जा सकता है। इसी के बाद से यहां साफ–सफाई की इस अद्भुत जीवन–शैली का विकास होता गया। यहां के लोगों को कंक्रीट के मकान की जगह बांस के बने मकान ज्यादा पसंद हैं। गांव के रास्तों पर जगह–जगह बांस की डस्टबिन लगी हुई है। गाँव की पगडंडियों और रास्तों दोनों ओर फूल–पौधों की क्यारियां हैं और स्वच्छता संबंधी निर्देश के बोर्ड लगे हैं। हमें पता चला कि हर परिवार का सदस्य गांव की साफ–सफाई में भाग लेता है।

मावलिननॉन्ग गांव मातृसत्तात्मक है। यहाँ के सार्वजनिक जीवन में महिलाओं का ज्यादा प्रभाव है और वे गांव को साफ रखने में अपने अधिकारों का प्रयोग करती हैं। यहां के खासी आदिवासियों में मां अपनी संपत्ति बेटी के नाम करती है और बच्चों के नाम के साथ मां का उपनाम जोड़ने की प्रथा है। गांव को 'भगवान का अपना बगीचा' (God's Own Garden) भी कहा जाता है। हमने ऐसी ही कई और विशेष बातें हमें इस गांव के बारे में पता चलीं। साल 2003 तक इस गांव में पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र नहीं था। यहां आने के लिए ठीक से सड़कें भी नहीं बनीं थी। लेकिन डिस्कवरी इंडिया ट्रैवल मैगेजीन के एक पत्रकार ने जबसे इस गांव पर एक स्टोरी दिखाई, यह पूरी दुनिया में चर्चा का केंद्र बन गया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भी 'मन की बात' के एक एपिसोड में इस गांव का जिक्र किया था।

भारत गांवों का देश है यहां की ज्यादातर आबादी गांवों में ही रहती है। जब हम लोग इस गाँव से वापस शिलांग जा रहे थे तो पूरे रास्ते में हम इसी बारे में बात कर रहे थे कि किस तरह भारत के सुदूर पूर्व में बसे एक गाँव ने अपनी स्वच्छता की संस्कृति के चलते पूरी दुनिया का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया है।

व्योमकेश शर्मा
उप प्रबंधक (राजभाषा)
आरईसी निगम मुख्यालय, गुरुग्राम

कारोबार से संबंधित गतिविधियां

G-20 सम्मेलन के अवसर पर ग्रीन फाइनेंस समिट का आयोजन

आरईसी एसोसिएट्स की बैठक

छत्तीसगढ़ के भिलाई में सीएसवीटीयू एग्री-प्रेन्योर इंटर्नशिप प्रोग्राम एंड ई-कॉमर्स एंड मार्किट रिसर्च प्लेटफार्म का शुभारंभ

पुरस्कार एवं प्रशस्तियां

आरईसी को ग्रीन रिबन चैंपियंस पुरस्कार

'उच्चतम मूल्य की एकल बोली' श्रेणी में प्रतिष्ठित जीईएम अवार्ड

द इकनॉमिक टाइम्स द्वारा 'मोस्ट प्रोमिसिंग बिजनेस लीडर्स ऑफ एशिया' का पुरस्कार

आरईसी लिमिटेड के मुंबई कार्यालय को
2020–21 में राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए गृह मंत्रालय द्वारा प्रथम पुरस्कार

आरईसी
REC
असीमित ऊर्जा, अनन्त संभावनाएं
Endless energy. Infinite possibilities.

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन

आरईसी अपने महिला कार्मिकों के उत्थान एवं सशक्तिकरण के लिए सदैव तत्पर रही है। प्रति वर्ष अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर कार्यालय द्वारा महिला कार्मिकों के लिए विशेष आयोजन किया जाता है।

सी. एस. आर. गतिविधियां

भारत में खेलों का व्यापक आधार और
उत्कृष्टता को बढ़ावा

जैव विविधता और वन्य जीवन संरक्षण
प्रयोगशाला और प्रशिक्षण केंद्र का उद्घाटन

4.5 करोड़ लोगों को सहायक
उपकरण वितरित

आरईसी
REC
असीमित ऊर्जा, अनन्त संभावनाएं
Endless energy. Infinite possibilities.

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निरीक्षण

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा पिछले 6 माह में आरईसी जयपुर सहित आरईसी देहरादून, लखनऊ और बेंगलु का निरीक्षण सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। निरीक्षण के बाद समिति द्वारा दी गयी रिपोर्ट पर अनुवर्ती कार्रवाई भी की गई।

आरईसी जयपुर कार्यालय का निरीक्षण

आरईसी देहरादून कार्यालय का निरीक्षण

आरईसी लखनऊ कार्यालय का निरीक्षण

आरईसी बेंगलुरू कार्यालय का निरीक्षण

आज़ादी का अमृत महोत्सव

G20 भारत 2023 INDIA

आरईसी REC
असीमित ऊर्जा, अनन्त संभावनाएं
Endless energy. Infinite possibilities.

बिजली बचाएं, बचत बढ़ाएं

बिजली का अनावश्यक उपयोग न करें

कम बिजली खर्च करने वाले उपकरणों का प्रयोग करें

विद्युत मंत्रालय
भारत सरकार

आज़ादी का अमृत महोत्सव

स्मार्ट मीटर
का उपयोग करें

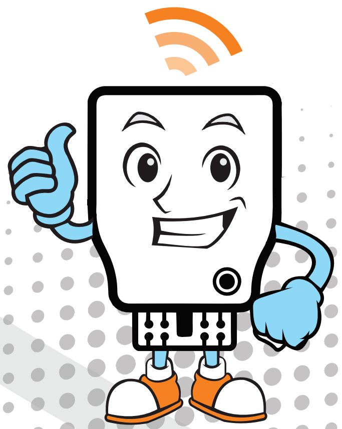

स्मार्ट मीटर
स्मार्ट शुरूआत

स्मार्ट मीटर के प्रयोग से बिजली की गुणवत्तापूर्ण, सुरक्षित और बेहतर आपूर्ति का लाभ उठाएं।
आज ही अपना मीटर स्मार्ट मीटर में बदलें।

सटीक मीटर रीडिंग	बिजली के उपभोग पर पूरा नियंत्रण	बिजली कटौती का शीघ्र समाधान	रिचार्ज के आसान विकल्प	मासिक बिलों में कमी

स्मार्ट मीटर के बारे में किसी भी जानकारी के लिए 1912 पर संपर्क करें

आरईसी
REC
असीमित ऊर्जा, अनन्त संभावनाएं
Endless energy. Infinite possibilities.

आरईसी लिमिटेड

(भारत सरकार का उद्यम)

सीआईएन: L40101DL1969GOI005095

पंजीकृत कार्यालय: कोर–4, स्कोप कॉम्प्लेक्स, 7 लोधी रोड, नई दिल्ली–110003

कॉरपोरेट कार्यालय: प्लॉट नं. आई–4, सेक्टर–29, गुरूग्राम, हरियाणा–122001

www.recindia.nic.in | +91-124-444 1300 | contactus@recl.in | हमें फॉलो करें: @reclindia